LEAVE OF ABSENCE

MR. CHAIRMAN: I have to inform Members that a letter has been received from Shri S.R. Bommai stating that he is unable to attend the House due to a fracture, and doctor has advised him to take rest. He has, therefore, requested for the grant of Leave of Absence for the 1st part of the current Session of the Rajya Sabha from 25th February to 22nd March, 2002.

Does the hon. Member have the permission of the House for remaining absent from the sittings of the House for the 1*' part of the current Session of the Rajya Sabha from 25th February to 22nd March, 2002?

(No *hon. Member dissented)*

MR. CHAIRMAN: Permission to remain absent is granted.

I have also to inform Members that a fax message has been received from Shri Yusuf Sarwar Khan *alias* Dilip Kumar stating that he is unable to attend the House due to his ill health. He has, therefore, requested for the grant of leave of absence for the 1st part of the 195th Session of the Rajya Sabha.

Does the hon. Member have the permission of the House for remaining absent from the sittings of the House for the 1st part of the 195th Session of the Rajya Sabha?

(No hon. Member dissented)

MR. CHAIRMAN: Permission to remain absent is granted. We now continue with the Short Duration Discussion.

SHORT DURATION DISCUSSION

The grave situation created by continuing violence in the state of Gujarat resulting In the loss of e large number of Innocent lives and property

MR. CHAIRMAN : Mirza Abdul Rashid, not present; Shri H.K.

Javare Gowda, not present; Shri R.N. Arya; not present. Shri Maulana Obaidullah Khan Azmi.

†**मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी** (बिहार) : सदर-ए-मोहतरम, बहुत-बहुत शुक्रिया । गुजरात ...(व्यवधान)... गुजरात असल में मैंने इसलिए कहा कि मसाइल एक-दो नहीं है और एक-दो जख्म हों तो और बात है ।

एक-दो जख्म नहीं, सारा बदन है छलनी,
दर्द बेचारा परेशां है, कहां से उट्ठे ।

सदर-ए-मोहतरम, इस वक्त हम लोग बहुत ही दिलखराश और मुसीबतों के माहौल में गुजरात के मसाइल पर चर्चा करने जा रहे हैं । आपने मुझे इस पर बोलने की इजाजत दी मैं आपका तहेदिल से ममनून हूं । सदर-ए-मोहतरम, हमारे मुल्क की यह बदकिस्मती है कि जो मुल्क अमन और शांति का पयाम्बर बन कर सारी दुनिया में अपना पैगाम देता था आज वह मुल्क बदअमनी के नाम से पहचाना जा रहा है । दुनिया की कौमें अमन के माहौल में खुशहाली की राह से गुजरती है । जिस मुल्क में भी बदअमनी होगी वह मुल्क कभी भी खुशहालियों का ख्वाब शर्मिन्द-ए-ताबीर नहीं कर पाएगा । मैं पूरी-पूरी कोशिश करूंगा कि किसी पर इलजाम लगाए बगैर हालात की सच्चाइयां मंजरेआम पर ले आऊं । सब से पहले मैं गोधरा में ट्रेन के हादसे की सख्त मज़म्मत करता हूं और उसके बाद में पूरे गुजरात में इंसानों के कत्लेआम,उनकी तबाही और बर्बादी, दुकानों और मकानों का खाकिस्तर होना पुलिस की मौजूदगी और गैर-मौजूदगी में भी लॉ एंड ऑर्डर का जिस तरह से मजाक उडा कर उसकी धज्जियां उडाई गई मैं ही इसको नहीं महसूस करता बल्कि मौजूदा मरकजी हकूमत के हेड ने भी उसको इंतहाई शर्मनाक वाकया करार दिया है । मैं कहना चाहता हूं कि इस मसले को हिन्दू और मुसलमान के पसमंजर में देखना सब से बड़ी बेईमानी होगी । मेरा यह मानना है कि जो कुछ गुजरात में हुआ वह न हिन्दू का कत्ल है, न मुसलमानों का कत्ल है, ऐ दुश्मनान-ए-हिन्द यह इंसान का कत्ल है और इंसानियत आज सोगवार है, जख्मी हैं । हमारे प्राइम मिनिस्टर ने यह फर्माया था कि गुजरात के दर्दनाक सान्हें से हिन्दुस्तान का सर सारी दुनिया में शर्म से झुक गया है । उनके फरमान की तसदीक करते हुए मैं यह कहना चाहता हूं कि सारी दुनिया में, अगर प्राइम मिनिस्टर ने इस बात को महसूस किया है कि हिन्दुस्तान का सर शर्म से झुक गया है तो फिर आखिर हकूमत-ए-हिन्दुस्तान का सर शर्म से कब झुकेगा? जिस तरह से वजीरे आला गुजरात, जनाब नरेन्द्र मोदी साहब ने इस वाकया की तौजीह व तशरीह की है वह गुजरात के फसादा से ज्यादा शर्मनाक है । ऐसा लगताहै कि गुजरात में कोई स्टेट का चीफ मिनिस्टर नहीं बैठा है बल्कि इंसानियत का कातिल एक फरीक बन कर सारी इंसानियत को और हिन्दुस्तान की गंगा-जमनी तहजीब को दुनिया में रूसवा कर रहा है । मैं ही इसबात को नहीं कहता बल्कि हमारे जितने टी.वी. चैनल्स हैं और हमारे जितने मीडिया प्रोग्राम्स हैं , वह भी कहते हैं । मैं इस हाउस से मीडिया का भी शुक्रगुजार हूं कि उस ने इसांनीयत के जख्मों को उजागर करने और दर्दमंद इंसानों को उस की तरफ मुल्तफित करने के लिए कोई कसर बाकी नहीं रखी ।

सदर-ए-मोहतरम, आम गांधी जी की सरजमीं सिसक रही है । वह महात्मा गांधी

†Transliteration of the speech in Persian Script is available in the Hind* version of the Debate.

जिन्होंने हिंसा के खिलाफ अहिंसा के पैगाम से एक मुअस्सर लड़ाई लडी थी, महात्मा गांधी ने बमों के इस्तेमाल को गुनाह समझा था, लाठी, बल्लम, भाला और तसद्दुद की हर राह को वह बहुत बड़ा जुर्मे-अजीम समझते थे, उस एक दरवेश ने, उस एक बेगरज इंसान ने, किस आन-बान-शान से हिन्दुस्तान को गुलामी के शिकंजों से आजाद कराने के लिए साबित कर दिया था कि सच्चाई वह बड़ा हथियार है जिस के जरिए हर झूठ को मात दी जा सकती है । महात्मा गांधी ने बगैर किसी तसद्दुद के , तन के गोरे मन के काले अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से सात समुंदर पार ढकेलकर इस धरती को स्वराज की रोशनी अता फरमाई थी । महात्मा गांधी ने यह साबित कर दिया था कि इस मुल्क में खुशूसियत से दो बड़े समुदाय हैं – एक को हम हिंदू के नाम से जानते हैं और दूसरे को मुसलमान के नाम से जानते हैं । यही दोनों हिन्दुस्तान की ताकत हैं, ये दोनों हिन्दुस्तान की बेमिशाल शक्ति हैं । हिन्दू, "ह" से शुरू होता है , मुसलमान "म" से शुरू होता है, हमारे महात्मा गांधी ने हिंदू का "ह" और मुसलमान का "म" निकालकर इसे "हम" बनाया था और एक आजाद हिंदुस्तान की शक्ल में हमारी धरती दुनिया के नक्शें पर उभरकर सामने आयी थी । आज महात्मा गांधी के उस गुजरात में, गांधी नगर में, बापू नगर में जिस तरह से तसद्दुद के वाकयात हुए हैं । मैं समझता हूं कि सारी दुनिया में हिंदुस्तान के माथे पर ये तसद्दुद के वाकयात एक कलंक साबित हुए हैं । मेरी गुजारिश है कि जो लोग भी मुजरिम हैं , उन तमाम मुजरिमों को दीन-धर्म , जात-बिरादरी के पसमंजर में न देखा जाय, मुजरिम के पसमंजर में उन की शिनाख्त की जाए और बेरहमी के साथ उन मुजरिमों को करारेवाकयी सजा देकर कैफ्रे-किरदार तक पहुंचाया जाय ।

अजीबोगरीब वाकयात इस मुल्क में रूनुमा हो रहे हैं । काश हिन्दुस्तान अमन के अलम्बरदार की हैसियत से पहचाना जाता, काश हिंदुस्तान एक आपसी एकता और सदभाव के नाम से पहचाना जाता । हमारी ये ख्वाहिशें हैं जो इस तसद्दुत के माहौल में जलते हुए शमां को देखते हुए दम तोड़ रही हैं ।

"नजर में है जलते हुए मकानों का मंजर, चमकते हैं जुगनूं तो दिल कांपता है ।"

ऐसा लगता है कि शायद ये जुगनूं की रोशनी न हो, ये भी फिरकावाराना फसाद की रोशनी हो ।

सदरे मोहतरम, मैं कहना चाहूंगा कि गुजरात के हालिया वाकयात को मैं फिरकावारान्प्र फसाद मानने के लिए तैयार नहीं हूं । ये एक तरह से सरकारी दहशतगर्दी है और सरकार कहीं-न-कहीं इसमें भरपूर तौर पर इनवॉल्व है । मेरी गुजारिश है कि जूडिशियल इंक्वायरी की जो बातें हो रही हैं, वह टाइम-बाउंड इंक्वायरी होनी चाहिए ताकि दूध-का-दूध और पानी का पानी साफ हो जाय । एक गुजारिश और कि नरेन्द्र मोदी साहब की मौजूदगी में हमें बिल्कुल यकीन नहीं है कि वहा गैर-जानिबदाराना इंक्वायरी हो सकेगी , इसलिए मैं गुजरात के वजीरे आला की बरखास्तगी की डिमांड करता हूं ताकि गुजरात की सरजमीं पर जो कुछ भी हुआ है , वह सारे-के-सारे नकाब उधेड़कर रख दिए जाएं और जिस तरह से जो लोग भी डायरेक्टली , इनडायरेक्टली मुलब्विस हैं, उन्हें सारी दुनिया के सामने मंजरे आम पर लाया जाय । सदरे मोहतरम, हमारे प्राइम मिनिस्टर ने फरमाया था और सही फरमाया था कि हम दहशतगर्दी और आतंकवाद से आर-पार की लड़ाई

लड़ने जा रहे हैं। हिंदुस्तान के हर भारतीय नागरिक ने इस का सहयोग किया था और इस का स्वागत होना भी चाहिए। हर पार्टी ने इस का स्वागत किया और मरकजी हुकूमत को आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में पार्टियों ने हर तरह से सहयोग दिया है। मगर मैं हुकूमते हिंद की तवज्जों इस तरफ मबजूल करवाना चाहता हूं कि आतंकवाद चाहे बाहर का हो, वह भी आतंकवाद है और आतंकवाद चाहे अंदर से सर उभार रहा हो, वह भी आतंकवाद है और जब आतंकवाद के खिलाफ आर-पार की लड़ाई का ऐलान हुकूमत कर रही है तो हुकूमत को यह देखना चाहिए कि गुजरात में आतंकवाद ने जो नया रूप लिया है , इस आतंकवाद को किस तरह उखाड़ फेंका जाय। अगर हमारे अंदर ही आतंकवाद पैदा हो रहा है और हम इस नज्जम दहशतगर्दी के शिकार हो रहे हैं, इस दहशतगर्दी से हिन्दुस्तान की आवाम की जानोमाल को महफूज नहीं कर पा रहे हैं तो हमें यह दावा करने का कोई हक नहीं बनता कि हम दहशतपसंदी से आर-पार की लडाई लड़ने जा रहे हैं।

सदरे मोहतरम, हमारी पार्लियामेंट पर इससे पहले हमला हुआ, यकीनन वह आतंकवादी हमला था। मैं कहना यह चाहता हूं कि जिन लोगों ने पार्लियामेंट पर हमला किया था वह तो आंतकवादी थे ही, मगर जो लोग पार्लियामेंट के कानून पर हमले कर रहे हैं क्या यह आतंकवाद का दूसरा रूप नहीं है? अगर कोई हमारे सुप्रीम-कोर्ट पर हमला करे तो यकीनी यह आतंकवादी जुर्म होगा, मगर जो लोग सुप्रीम-कोर्ट के कानून की धज्जियां उड़ा-उड़ा कर इस देश में मुल्क के कानून और दस्तूरे-हिंद का मजाक उड़ा रहे हैं उन्हें सरकार आतंकवादी कहने के लिए तैयार क्यों नहीं है? और, ऐसे आतंकवादियों को वही सजा देने के लिए तैयार क्यों नहीं है , जो खुले हुए आतंकवादियो को दी जाती है ? मैं इस मसले पर इतना मजरूह हो चुका हूं कि ज्यादा कुछ न बोलते हुए सिर्फ इतना कहना चाहूंगा कि पार्टियों से ऊपर उठकर इस मसले को देखा जाना चाहिए क्योंकि पार्टियां छोटी होती हैं मुल्क बड़ा होता है, राही बड़ा नहीं होता राह बड़ी होती है, नेता बड़ा नहीं होता नीति बड़ी होती है। हिन्दुस्तान की नीति सेकुलरिज्म की हैं, हिन्दुस्तान की जम्हूरियत में यकीन रखती है।

सदरे मोहतरम, हमारे जितने भी मिनिस्टर हैं वह सदरे हिन्दुस्तान के पास जाकर शपथ ग्रहण करते हैं और जो चीफ मिनिस्टर हैं वह गवर्नर के पास जाकर शपथ ग्रहण करते हैं। वह किस बात का हलफ लेते हैं? मैं बताना चाहता हूं कि वहां हर शपथ लेने वाला एक पेपर लेकर पढ़ता है कि मैं वादा करता हूं , मैं हलफ उठाता हूं, खुदा के नाम की हलफ उठाता हूं , ईश्वर के नाम की हलफ उठाता हूं कि मैं अपनी कुर्सी पर बैठकर भेदभाव नहीं करूंगा, जाति-बिरादरी की बुनियाद पर इंसाफ नहीं करूंगा, दीन-धर्म का नाम लेकर इंसाफ नहीं करूंगा, मगर गुजरात के वाकयात ने यह साबित कर दिया कि नरेन्द्र मोदी, गुजरात के चीफ मिनिस्टर ने उस हलफनामें को तोड दिया है, इस कसम के एतबार को खतम कर दिया है। अब लोग किस तरह एतबार करेंगे मिनिस्टरों पर, किस तरह लोग एतबार करेंगे हुकूमतों पर कि हुकूमतों के यह जिम्मेदार लोग जो हिन्दूस्तान के दस्तूर का हलफ उठाते हैं, खुदा का नाम लेकर हलफ उठाते हैं, ईश्वर और परमात्मा कानाम लेकर हलफ उठाते हैं, उसका पालन करते हैं ? जो लोग आवाम को धोखा देते हैं, वह खुदा को धोखा देते हैं , वह खुदा के बंदों से कभी इंसाफ नहीं करते। खुदा के बंदों के साथ गुजरात की धरती पर नाइंसाफियों का वह सिलसिला जारी हुआ है , जिसमें तारीख के मुजरिमों को कभी भी दुनिया की इंसानियत माफ नहीं कर सकती।

सदरे मोहतरम, मैं एक बात कहकर अपनी बात को आगे बढ़ाना चाहूंगा कि आज हिन्दुस्तान के जो हालात हैं , जिस तरह लोगों ने सत्ता की कुर्सियों पर बेठकर इंसानों की लाशों की तिजारत करना शुरू किया है, उनसे डायरेक्ट मुखातिब होकर कहना चाहूंगा कि –

यह जो दामन पर तुम्हारे है लहू के धब्बे,
तुमको एक उमर गुजर जाएगी धोते-धोते।

जो भी हुकूमरान होता है उसको यहां से लेकर वहां तक का हिसाब देना पड़ता है । अगर उसने खुदा के नाम पर शपथ ग्रहण की है तो यहां एक ऐसी मजबूत ताकत मौजूद है , जो दिखाई नहीं देती, मगर यह सारे इंसान उसके कुनबे कबीले है । हजरत मुहोम्मद सल्लाहु-अलयहे वसल्लम ने फरमाया था कि अल खलकु अयालुल्लाह, तमाम दुनिया का इंसान खुदा का कुनबा कबीला है । हम खुदा के नाम पर खुदा के कुनबे कबीले को तोड़ते हैं, जो मजहब के साथ भी गद्दारी है , दस्तूरे-हिन्द के साथ भी गद्दारी है । ऐसे किसी भी इंसान को इस तरह इस कुर्सी पर बैठने का हक हासिल नहीं होता,जो इस तरह कुर्सियों पर बैठकर इंसानों की लाशों की तिजारत कर रहे हैं ।

सदरे मोहरतम, मैं यहां यह मुतालबा करूंगा कि गुजरात में जितने लोग मारे गए हैं उन्हें भेदभाव के साथ न देखा जाए । उन मजलूमों के खानदान को वही मुआवजा दिया जाए, जो गोधरा में ट्रेन में मरने वाले मजलूमों के खानदानों को देने का वादा किया गया है और साथ ही साथ जिन लोगों की जायदाद इमलाक बरबाद हुई हैं उनकी जायदाद और असासे का तखमीला लगाकर उनके साथ इसांफ किया जाए, उनको बसाने के लिए भरपूर मुआवजा दिया जाए ।

सदरे मोहतरम, आपने मुझे बोलने का मौका इनायत फरमाया, मैं आपका तहेदिल से शुक्रगुजार हूं । हिन्दुस्तान जिन्दाबाद, भाईचारा पाइन्दाबाद ।

MR. CHAIRMAN: Shri R.S. Gavai, not here.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN (Kerala): I thank you, Mr. Chairman, Sir, for giving me this opportunity to express my views in respect of the Gujarat-episode.

Sir, first of all, I would like to take this opportunity to condemn the inhuman and brutal killings of the people who travelled in the Sabarmati Express train and, also, the subsequent events which took place in the State of Gujarat, killing hundreds of people and destroying their property. Sir, the Sabarmati Express train was torched on the 27^{th} morning, and it took 59 person's lifel In the subsequent events which took place on the 27^{th} February, the 28^{th} February, and the 1^{st} March, hundreds of innocent people were killed. Their property was destroyed in the incidents or in the communal riots. The Godhra killings as well as the subsequent killings

could never be justified in words or in action. It is shameful to the whole nation. The image of our country, the image of India, at the international level, has been tarnished because we, the largest, functional democracy in the world have to bow our heads in shame before the world. It is very shameful. That is why, I am saying nobody could justify it. We cannot merely describe it as a communal riot or as an incident of communal violence because it is a heinous crime against the humanity and the mankind. It is a crime against the whole mankind. So, these incidents, the Godhra killings, as well as the subsequent communal riots or the subsequent killings of the innocent people, have to be condemned in strong words, and it has to be dealt with a firm hand. That is the need of the hour for protecting the secular credentials or the secular fabric of this country and, also, for bringing normalcy and peace in the country.

Sir, when we condemn these two things, the main question to be considered by this august House is what the role of the State Government was at that time. "Maybe, there was an action first, and, then, there was a retaliation", that might be a logical argument, as far as they are concerned. As far as the persons who are involved in the riots are concerned, they can justify that saying "there was an action, and that was a reaction" or "there was an action, and that was the retaliation". But our main point is what the role of the State Government was to contain and control the violence in the State of Gujarat, the violence which started on the 27th morning, and which is continuing till today. Even yesterday, somebody was charred to death. We have to analyse that. Communal riot is not a new thing, as far as India is concerned. Before Independence and after Independence, there were so many communal riots-Bombay riots, Delhi riots, Ahmedabad riots, Baroda riots. So many experiences we have had. But this incident has its significance. What is the significance? Almost, all are saying that a particular community had been targeted; there was a total collapse of the State machinery. There was a collapse of the Constitutional machinery, in that particular State, in controlling and containing the violence which spread just like a fire. That is the point to be considered, as far as the Parliament is concerned. Whether the State Government had discharged its Constitutional duty, which was expected of them, and whether they had acted in time--these are the main questions to be considered. Sir, when we consider those questions, my submission is, the State Government has miserably failed; it has not only failed, but, in an indirect way, they have also supported the terrorism, the violence, the arson and looting against the

minority people in that particular State. That is the main point which we have to re consider. Sir, we have witnessed in the visual media that the skyline of Ahmedabad and Baroda was filled with black smoke emanating from the burnt houses, shops, establishments, and it was a revenge for the Godhra killings. Children and women were running for rescue; they were crying for help, but nobody was there to help them. Even a former Member of the Lok Sabha, along with his entire family, was charred to death. According to the Press-reports, he had made 2000 telephone callsl Nobody was there to help the former Member of the Lok Sabha. His entire family was charred to death. We can cite so many incidents. Sir, the Wakf Board Office and many other offices were totally destroyed. How have they been destroyed in front of the State Police? I can cite so many examples. Because of the lack of time, I am not giving the examples. In front of the Police Station, so many incidents took place. But the Police was silentl What is the meaning of inaction on the part of the police? It means, support to the riots. Definitely, it meant support to the riots. My point is that the State was virtually handed over to the VHP and the Bajrang Dal, who had left a trail of murder, arson and looting in retaliation to the Godhra attack. When did the police start acting? The police started acting only at 2.00 P.M. on 28th February, when a mob attacked the City Police Commissioner's office by pelting stones. The police started acting slowly, after their office was attacked. That is what actually happened there. Even the police officials told a journalist of The Indian Express-It was quoted in The Indian Express-that the instruction was "not to be firm with the rioters". Not to be serious or not to be firm with the rioters was the direction that was given by the higher authorities. Who were those authorities, was not mentioned. My question is: Is it not a terrorism? Is it not a communal violence against a particular community to wreak revenge for the Godhra killings? Is it not a fact that the Home Minister or the Gujarat Chief Minister had failed in discharging his Constitutional, moral and legal duty? Even now he is continuing in office. It was reported in the Press that the Chief Minister had said, "Every action has an equal and opposite reaction*. Though the Chief Minister has disputed it, the Chief Minister was well aware of the fact that if there was an action, there would be a reaction. What abundant caution or precaution did the State Government take to prevent the reaction? No action was taken. *...(Interruptions)...*

---

*Expunged as ordered by the Chair.

श्री कलराज मिश्र (उत्तर प्रदेश) **:** मान्यवर, अभी जो आपने चीफ मिनिस्टर के स्टेटमेंट की बात कही, चीफ-मिनिस्टर ने इस स्टेटमेंट को कंट्राडिक्ट किया है ...(व्यवधान)...

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ (Madhya Pradesh) : Don't try to mislead the House. *..(Interruptions)...*

श्री कलराज मिश्र : उन्होंने कहा कि हमने ऐसा कुछ नहीं कहा और मीडिया ने उसको जबरदस्ती दे दिया और उसी को बार-बार रेफर कर रहे हैं, यह अच्छा नहीं है ...(व्यवधान)...

SHRI NILOTPAL BASU (West Bengal) : He has mentioned that the Chief Minister had disputed it. *...(Interruptions)...*

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: Don't mention the name of the Chief Minister. *...(Interruptions)...* What type of a Chief Minister is he? *..(Interruptions)...*

श्री नीलोत्पल बसु : मिश्र जी, उन्होंने यह मान लिया है ...(व्यवधान)... डिस्प्यूट करने से तो काम नहीं चलता। उन्होंने कल भी टेलीविजन चैन्ल्स पर दिखाया कि ऐहसान जाफरी वाले इंसिडेंट में उन्होंने कहा कि प्राइवेट फायरिंग हुई है ...(व्यवधान)...

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: What is just, according to you? ...(Interruptions)... Going on killing the people? *...(Interruptions),...*

श्री कलराज मिश्र : देखिए, "every action has an equal and opposite reaction", यह जो शब्द प्रयोग किया है, उसको चीफ-मिनिस्टर ने बिल्कुल कंट्राडिक्ट किया है और एक बार नहीं, कई बार कंट्राडिक्ट किया है। इसको बार-बार यहां कोट करना उचित नहीं है।

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: Absolutely not. He is a catalyst to this incident.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN: The Chief Minister said so. When 59 people were killed in Godhra, the Chief Minister ought to have known that violence would break out. How were they killed? They were killed brutally by setting the train on fire. The Chief Minister should have known that some reaction would be there. Did the Chief Minister take abundant caution or precaution? That is my point. It was reported in the Press. It is not an allegation by me alone. The Chief Minister and the State Administration have not discharged their Constitutional responsibility. They

have not discharged their duty. Therefore, the Chief Minister has no moral right to continue in office. This is point number one.

The second point is this. After the Godhra killings, the Defnece Minister had visited the place and said that the Godhra incident was a premeditated, pre-planned one, and that the hands of the ISI were behind it. Godhra is notorious for communal tension and communal violence. This particular incident took place at Godhra when the Karsevaks were returning after performing some pooja and other things. My point is, since it is a place prone to communal violence and communal tension, what caution or precaution did the Government take to avoid this unhappy incident? There also, the State Government had failed, and, for that reason alone, the State Government has to resign. When 59 people were killed in Godhra, a large-scale violence should have been anticipated. There were earlier experiences. In the year 1982, there were communal riots. There were so many communal riots. What abundant caution or precaution did the Government take to avoid that unhappy incident? I would like to know whether the Government has got any justification for that. What is the Intelligence doing? The hon. Defence Minister is still saying that there is an apprehension. Day before yesterday, the Gujarat Chief Minister and the officials were saying, "We are still investigating". What is the result of the investigation? Without having any investigation, the Defence Minister and the Chief Minister said, "Some hands were behind it. The ISI hands were behind it". If that be the reason, I mean, if that reason is justifiable, then also, there is a failure on the part of the State Government, especially, Shri Narendra Modi, the Chief Minister of Gujarat.

Sir, as regards the speech of the hon. Law Minister in the House, we were very much surprised to note that throughout his speech, he was making a comparison of the events that took place in 1984 and now, in 2002. Can we draw a comparison between what happened in Delhi in 1984 and the present incidents that took place at Godhra and subsequently at other places? Can one crime be justified by another crime? And, who was speaking on this line? It was the hon. Law Minister who was mentioning in the course of his speech that the number of persons arrested now was so much, the number of persons killed was so much; and that in the year 1984, the number of persons arrested was so much and the number of persons killed and arrested was so much. He went on to say that that was a bigger crime than this and all that. This is the analysis which he has

made before the House. Is this a responsible statement? Can this crime be justified by saying that the number of persons killed in these incidents is less or that the number of persons arrested in these communal incidents is more and, therefore, it showed that abundant caution was, indeed, taken by them.

MR. CHAIRMAN: Please wind up.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN: I am concluding, Sir. And, the hon. Law Minister has given an advice to us, saying that we should learn a lesson from this incident. I strongly feel that it is not the Opposition which has to learn a lesson, but it is the BJP, the Government, which has to learn a lesson from Godhra incident. What is the real cause for all these things? The real cause is the BJP's political agenda. What is its political agenda? It is its Hindutva doctrine which is the basic Cause for all these happenings. And, the Government and the BJP, indeed, have learnt a lesson. What happened when the hon. Prime Minister and the Home Minister appealed to the VHP saying, 'You please desist from the activities of construction of Ram temple"? They are not ready to accept the views of the hon. Prime Minister. The communal passion started vigorously right from 1989 -- it cannot be disputed by the hon. Home Minister -- When the Rath Yatra was started from the State of Gujarat to Ayodhya, spreading communal passion throughout the country, and, finally it resulted in the demolition of the Babri Masjid on 6th December, 1992. And, now, in 2002, it has spread all over the country. When you have given freedom to some forces, you cannot contain it; you cannot take it back. My submission to him is, at least now learn from these incidents. There is no doubt that both the minority's and the majority's rights should be protected. We are condemning the killings at Godhra as well as the subsequent incidents. My question to him is: Have they done their duty that they ought to do in a democratic country?

Sir, what has happened now is that the entire country, including media, both the official and the print media, are confining themselves to the happenings at Ayodhya and Gujarat. But what has happened to the price hike? There have been hike in the prices of kerosene and LPG. What is there in the Railway Budget? A Cabinet decision has been taken...

MR. CHAIRMAN: You must conclude now.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN: Sir. I was just saying that ail these economic issues, the financial aspects, have been taken away from the minds of the people. I apprehend that this is a tactic to divert the people's attention from the basic issues.

Sir, I conclude by saying that the Chief Minister of the State has no moral authority to continue in office; and, taking moral responsibility for all that has happened, the Home Minister should also resign. With these words, I conclude.

MR. CHAIRMAN: Shri Shankar Roy Chowdhury. Not present. Shri C. Ramachandraiah.

SHRI C. RAMACHANDRAIAH (Andhra Pradesh): Sir, these types of discussions have become a regular feature in Parliament. In every Session, there is a discussion on communal riots, and this has become a platform for us to display our oratory and other skills rather than trying to solve the problem. Sir, yesterday, I received a phone call from one of my friends who is residing abroad. He asked me: "Is India secular at all?" Why do you have the word 'secular' in the Preamble of your Constitution?" People are getting a doubt as to whether we can protect the secularism in this country, secularism that has been the pillar and edifice of our democracy. I am not blaming a particular individual or a particular Government. This has been the case ever since independence.

Sir, the credibility of democracy is being threatened in this country. A very grave atmosphere is prevailing. Undoubtedly, the State Government had failed in getting the information or in controlling the incidents. As one of my friends has commented, I should say that one particular incident should not become an answer for another violent incident, or, one religious fundamentalism should not be an answer to another religious fundamentalism. Why has this atmosphere been created? This is not an incident which took place all of a sudden. This sort of hatred is developing among the major communities in the country, and it is quite natural that the minorities, wherever they are, always live in a sense of insecurity; and that makes them united. The majority community should not be jealous of that unity. So, what is happening in this country is that, Sir, we the political parties, are trying to take advantage of every situation under the guise of being the champion of the cause of either of the minority or of the majority. So, Sir, my sincere advice to the Government is, to have an introspection

and find out why such incidents are occurring very frequently, and why this discussion is being held very regularly in this House. Why are you unable to control such incidents which are taking place in the country? Sir, unfortunately, the Gujarat Chief Minister is a green-horn in administration. I don't know why he was not able to control it. If we attach any credibility to the Press, never did it happen where the State administration was alleged to have colluded with the perpetrators of atrocities there, and never did we read such reports in the Press. Such reports have appeared not only in other newspapers, but also In a newspaper like *The Hindu* which has got some credibility in the country. Sir, yesterday I received a phone call from one of the correspondents of a very reputed foreign magazine, who has toured the entire area; he told me that a very horrendous crime had been committed there. It is not that I am trying to justify one incident against another incident, or, the Godhra incident against the post-Godhra incidents. Why has one community developed such a hatred towards another community? Have We not contributed to it? It is high time we do an introspection, cutting across party lines. Let us not take political advantage of it; let us build a clean society so that we can live in peace and amity. Sir, as one of my friends has commented, our country is besieged with so many economic problems; economic deprivation is there. Unfortunately, we are unable to attend to those problems, and a trivial issue like temple construction has acquired prominence over other important issues. It is playing havoc with our lives. Sir, it is high time the Government thinks over it. The Government should take all the political parties into confidence and all the political parties should also, in good faith, contribute to building up a good society.

श्री अहमद पटेल (गुजरात) : सभापति जी, मैं आज भारी दिल और व्यथित मन के साथ सदन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं । जो हादसे हुए हैं, चाहे वे गुजरात में हुए हैं या चाहे वे वेस्ट बंगाल में हुए हैं या कहीं और हो रहे हैं, उनकी मैं पुरजोर निन्दा और भर्त्सना करता हूं । महात्मा गांधी जी के गुजरात को पता नहीं क्या हो गया है? राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने इस देश को आजादी दिलाई । लेकिन यहां आजादी की विरासत में जो हमें महान मानव मूल्य मिले हैं, उन्हें नुकसान पहुंचाया जा रहा है । सत्य, अंहिसा और सर्वधर्म समभाव, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना पर आज प्रहार हो रहे हैं, उस को तहस-नहस करने की कोशिश की जा रही है । हमारा जो सोशल फेब्रिक है, उसे तहस-नहस करने की कोशिश की जा रही है। गोधरा में जो कुछ हुआ, वह शर्मनाक था । मां अपने बच्चे को सीने से लगाये हुए थी और उसे जलाया जा रहा था । अहमदाबाद में नरोदापाटिया में, ऐसे कई हादसे हुए हैं, जहां महिलाएं, प्रेगनेंट लेडी, जो बेचारी दो-चार रोज बाद मां बनने वाली थी, उनके पेट को चीरकर उनके बच्चे को निकालकर उसको जलाया जाना, इससे बड़ी शर्म की बात और कोई नहीं हो सकती है । ये हैवानियत है, शैतानियत

है और जब एफ.आई.आर. दर्ज की जाती है तो उसमें नाम भी नहीं लिखा जाता। मैं उस पर बाद में आऊंगा लेकिन आज गुजरात में जो कुछ हुआ – आर्थिक नुकसान हुआ। जैसा मैंने कहा कि पता नहीं गुजरात को किसी की नजर लग गयी है। साइक्लोन हुआ, अर्थक्वेक हुआ और उसके बाद यह मानव सृजित आपति जिसे कहते हैं , विपदा कहते हैं, वह आयी। अब तक गुजरात में 25 हजार करोड़ से भी ज्यादा रूपए का नुकसान हो चुका हैं। मैं समझता हूं कि ये दंगे-फसाद तो एक सिम्पटम है, असली बीमारी तो साम्प्रदायिकता है, कम्यूनलिज्म है। उसे रोकने के लिए हम क्या कर रहे हैं?

"आज अंधेरों में जो रोशनी दिखाई देती है,
बंस्ती अमन की जलती हुई दिखाई देती है।
और सियासत इंसान को कैसे गंदे मोड़ पर ले आई
कि इंसानियत आज दम तोड़ती दिखाई देती है।"

इंसानियत या मानवता जैसी कोई चीज ही नहीं रह गयी है। कम्यूनलिज्म या साम्प्रदायिकता किसी की भी तरफ से हो – चाहे अकलियत की तरफ से हो या अकसरियत की तरफ से हो – बुरी है। जैसा पंडित जी ने कहा था कि अक़लियत की तरफ से जो कम्यूनलिज्म होता है, वह तो बुरा है ही लेकिन अगर अकसरियत की तरफ से कम्यूनलिज्म होता है तो वह उससे भी खराब है। चाहे वह जम्मू कश्मीर में हो, चाहे पंजाब में याह कहीं भी हो – अकसरियत हो या अक़लियत हो – गुजरात मे जो कुछ भी हुआ, वह उससे भी वर्स है। जब भी कुछ होता है – चाहे अमरनाथ यात्रियों पर हमला करके उनको मारा जाए, चाहे ब्लास्ट हो, चाहे 6 दिसम्बर को मस्जिद गिराई जाए, चाहे पार्लियामेंट पर हमला हो, चाहे जम्मू-कश्मीर में विधान सभा पर हमला हो – सिर्फ यह कहकर बैठ जाना कि यह राष्ट्रीय कलंक है या हमारा सिर शर्म से झुक जाता है, मैं समझता हूं कि यह सफीशिऐंट है। हमारा सिर जो झुका हुआ है, वह कब सीधा होगा ? हम कब कह सकेंगे कि हमारे देश में कम्यूनलिज्म नहीं है, साम्प्रदायिकता नहीं है, फिरकापरस्ती नहीं है। आखिर धर्म क्या है? धर्म के नाम पर, मजहब के नाम पर सब कुछ हो रहा है। धर्म और मजहब का मतलब करूणा है, वेदना है। हमारा जो नेबर हैं, उसने खाना खाया या नहीं खाया, वह भूखा तो नहीं सोया है उसके प्रति हमारा दायित्व क्या है, फर्ज क्या है? धर्म या मजहब कभी भी हिंसा या तनाव की बात नहीं करता। जहां धर्म है, वहां हिंसा नहीं हो सकती। जहां मजहब है वहां तनाव नहीं हो सकता या उसे पलटकर कहें तो जहां हिंसा है, तनाव है, वहां कुछ भी हो सकता है लेकिन धर्म या मजहब नहीं हो सकता। धर्म या मजहब का इस्तेमाल खुदा या ईश्वर तक पहुंचने के लिए होता है लेकिन दुख की बात यह है कि कभी-कभी धर्म का इस्तेमाल, मजहब का इस्तेमाल जब सत्ता बनाए रखने के लिए होता है, कुर्सी बनाए रखने के लिए होता है या सत्ता पाने के लिए किया जाता है तो उससे बड़ी शर्म की बात या उससे बड़े दुख की बात और कोई नहीं हो सकती। जो कुछ गुजरात में हुआ या जो कुछ पहले हुआ – जैसा मैंने कहा कि अमरनाथ यात्रियों पर हमला हो या पार्लियामेंट पर हमला हो, मैं जानना चाहता हूं कि हमारी इंटैलीजेंस क्या कर रही थी? पहले जब कार सेवक जाते थे तो मुझे याद है कि जो-जो सैंसिटिव स्टेशंस होते थे – चाहे वह गोधरा हो या दूसरा कोई हो – वहां पर इंतजाम किया जाता था। एक सीनियर पुलिस ऑफिसर को उनके कम्पार्टमेंट में बैठाया जाता था। मुझे नहीं मालूम कि अब की बार गुजरात सरकार ने ऐसा क्यों नहीं किया? कहा जा रहा है कि राजकोट में जो मुख्य मंत्री का चुनाव चल रहा था, सीनियर ऑफिसर्स उसमें बिजी थे। उनको पता ही नहीं था कि क्या होने वाला है। अब जब मुख्य मंत्री यह कह रहे हैं कि यह सब प्री-प्लांड था तो इसका मतलब यह हुआ कि

इंटैलीजेंस की तरफ से इनफॉर्मेशन जो आनी चाहिए थी , वह क्यों नहीं आयी और अगर आयी तो उन्होंने कदम क्यों नहीं उठाया? मैं यह पूछना चाहता हूं कि गोधरा कम्यूनली सैंसेटिव स्टेशन है, और भी दूसरे सैंसेटिव स्टेशंस हैं, वहां पुलिस फोर्स क्यों नहीं रखी गयी? कहीं ऐसा जान-बूझकर तो नहीं हुआ? मैं गृह मंत्री जी से यह पूछना चाहता हूं कि अगर यह प्री-प्लांड था तो इसकी रिपोर्ट क्यों नहीं आयी और अगर रिपोर्ट आयी तो उस पर कार्यवाही क्यों नहीं की गयी? वहां ऐडिश्नल फोर्स क्यों नहीं लगायी गयी? उसके बाद 27 को जो हिंसा हुई – 27 को शाम को ऐंटीसिपेट करके कि कुछ भी हो सकता है, जब बंद का काल दिया था, कोई कदम क्यों नहीं उठाया गया? The Commissioner of Police didn't even hold a meeting of officers on the 27th Godhra incident which took place in the morning and subsequent violent reactions in Ahmedabad city. He didn't give clear directions for enforcing prohibitory orders which are always issued under Sections 37(1) and 37(3) of the Bombay Police Act. No preventive arrests were made. This was an extraordinary situation because in such a situation, known bad characters, as well as, potential trouble-makers should have been rounded up. कितने अरैस्ट हुए, क्या हुआ? कोई मीटिंग हुई या नहीं हुई? क्यों नहीं बुलायी गयी? No attempt was made by the Police, at any level, to hold a meeting between the two communities for creating confidence in the mind of the people, in general, and the minority community, in particular. It is evident from these actions that it was a deliberate attempt, जब जिम्मेदार लोग यह कहें कि every action has an equal and opposite reaction. अभी कान्ट्राडिक्ट किया गया, चीफ मिनिस्टर ने कान्ट्राडिक्ट किया । आप पहली तारीख का इलेक्ट्रानिक मीडिया देख लीजिए, गुजराती दूरदर्शन में क्या आया, वह देख लीजिए । प्रिंट मीडिया में सपोज कि किसी ने गलत कह भी दिया लेकिन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में तो जो कहा गया, वह टेप में है । वहां जाकर आप देखिए कि क्या कहा मुख्य मंत्री जी ने । उसके बाद इंटरव्यू दे देना, कान्ट्राडिक्ट करना यह तो सही बात नहीं है । अफसोस की बात तो यह है कि जब पुलिस आफिसर्स, जिम्मेदारी लोग यह कहें कि my force is also not above sentiments, यदि जिम्मेदार पुलिस आफिसर्स यह कहने लग जाएं तो हालत क्या होगी? इनसिक्योरिटी की फीलिंग होगी । मेरा प्रश्न यह है कि जो भी कुछ गुजरात में हुआ, चाहे वह गोधरा में हुआ या और जगह हुआ, उसे सीरियसली लें ताकि भविष्य में ऐसे हादसे न हों, इसके लिए सरकार क्या कदम उठाने जा रही हैं ? कहते हैं "चिंगारी कोई भड़के तो सावन उसे बुझाए, सावन जो आग लगाए उसे कौन बुझाए?" मैं समझता हूं कि ये सारी बातें मद्देनजर रखी जानी चाहिए ।

सभापति महोदय, उसके बाद यह होने के बाद भी, हमारे गृह मंत्री जी यहां बैठे हुए हैं, कांग्रेस की तरफ से हम लोग प्रधान मंत्री जी के पास गए थे कि वहां आर्मी भेजिए । उन्होंने कहा कि आर्मी भेज रह हैं, वह स्टैंडबाय होगी । रात को दो-ढाई बजे आर्मी वहां पर पहुंचती है और not a single officer was there. उनको कहां जाना था, क्या करना था, उनको गाइड करने के लिए कोई वहां पर उपस्थित नहीं था । न तो उनको ट्रांसपोर्टेशन प्रोवाइड किया गया। मैं समझता हूं कि यह डेलीबरेटली किया गया । मैं गृह मंत्री जी से, सरकार से यह जानना चाहता हूं कि अर्मी गई थी तो इतना डिले क्यों हुआ? उसका डिप्लॉयमेंट क्यों नहीं हुआ? अहमदाबाद में

पुलिस कमिश्नर ने मीटिंग तो नहीं बुलाई बल्कि ट्रैफिक के जो पुलिस कांस्टेबल वहां थे, 700 के करीब वहां पर हैं, 12 सीनियर ऑफिसर थे, उनको पुलिस कमिशनर के ऑफिस में ही बैठा दिया गया। कम से कम यदि उनका डिप्लॉयमेंट होता तो थोड़ा बहुत लॉ एंड ऑर्डर को हम कंट्रोल कर सकते थे। तो मैं समझता हूं कि यह जान-बूझ कर किया गया चाहे वह गोधरा में हो या गोधरा के बाद का हो। उसके बाद क्या हुआ? जब पता चला की ऑल पार्टी डेलीगेशन जा रहा है, एक भी रिलीफ कैंप शुरू नहीं किया गया। न तो कंपनसेशन की बात की गई। जब भी ऐसा कुछ होता है तो इमीडिएटली कैशडोल दी जाती है। जो बेचारे भाग-भाग कर आ रहे थे कहीं से, सेफ जगह पर इकट्ठे हो रहे थे, वहां के लोगों ने इंतजाम किया। उन्होंने उनकी मदद की लेकिन जब तक ऑल पार्टी डेलीगेशन नहीं गया तब तक सरकार ने कुछ नहीं किया। जब ऑल पार्टी डेलीगशन गया तब आर्मी ने थोड़ी बहुत मदद करनी शुरू की। मेरे ख्याल से बहुत ही कम रिलीफ कैम्प हैं जो गवर्नमेंट' स्पॉन्सर्ड हैं और उनमें करीब एक लाख लोग आज भी हैं , उनका क्या होगा? न तो एफ.आई.आर. दर्ज की जाती है। एफ.आई.आर. दर्ज करने की बात तो अलग रही लेकिन अगर कहीं गलती से दर्ज कर भी दी तो पुलिस कह रही है, कोर्ट में लिख रही है कि इनके नाम विदड्रा कर लो। नाम हटाए जा रहे हैं, यह कहा जा रहा है कि अगर हम कंप्लेंट रजिस्टर करेंगे तो वह ग्रुप में होगी। जनरल कंप्लेंट हम लोग रजिस्टर करेंगे, इनडिविजुअल कंप्लेंट रजिस्टर नहीं करेंगे। क्या मतलब है इसका? मैं चाहता हूं कि रिलीफ कैंप ठीक तरह से चलें, लोगों को कंपनसेशन मिले। जब इतनी आवाज उठी और कहा गया कि वहां पर दो लाख रूपए दिन जा रहे हैं तो आज यहां एक लाख रूपए दिए जा रहे हैं। अब कह रहे हैं कि सबको एक-एक लाख रूपया मिले। यह कोई बात है? देना है तो उनको भी दो लाख दीजिए और अगर ऐनाउंस किया है तो उनको भी दो लाख दीजिए। क्यों उनके साथ अन्याय कर रहे हैं? मेरी तो समझ में नहीं आ रहा है कि इस तरह से डिस्क्रिमिनेशन क्यों किया जा रहा है? चाहे कोई भी हो, हिंदू हो या मुस्लिम हो ...(व्यवधान)...प्लीज़ ...(व्यवधान)...

श्री ललितभाई मेहता (गुजरात) : गुजरात की सरकार ने ऐनाउंस कर दिया है कि सभी को एक लाख रूपए दिए जाएंगे। आज के अखबार में यह बात आई है।

श्री अहमद पटेल : लेकिन वे घटा क्यों रहे हैं? अगर दो लाख दे रहे हैं तो बाकी लोगों को भी दो लाख दे दीजिए। मैं तो आर्ग्युमेंट कर रहा हूं कि अगर उनको ज्यादा पैसे मिलेंगे तो हर्ज क्या है? इसमें क्या प्रॉब्लम है? ...(व्यवधान)...

श्री नीलोत्पल बसु : सात दिन के बाद यह हुआ है।

श्री अहमद पटेल : ठीक है, मैं उस चीज में नहीं जाना चाहता लेकिन एक तो रिलीफ कैंप की बात हो गई और मैं सरकार का ध्यान इस ओर भी आकर्षित करना चाहूंगा कि ऐसा नहीं था कि यह सिर्फ रीएक्शन था, सारे ही लोग साम्प्रदायिक थे लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे जो इसी का फायदा उठाकर अकल्लियत के बाकी लोगों की जो मिल्कियत थी, उसको हड़पता चाह रहे थे। कहीं पर ऐसा हुआ कि मकान जला दिया गया, उनका सामान लूटा गया और जो प्लॉट बचा है, उसी पर अवैध ढ़ग से कब्जा करने की कोशिश की जा रही है। कम से कम इसके बारे में सोचना चाहिए। जहां किराएदार थे, उनकी दुकान से सामान बाहर निकाल कर जला दिया गया, लूटा

गया और उसके बाद जो मालिक था, उसके द्वारा रात को ही पूरे नए शटर चेंज किए गए, साईन बोर्ड चेंज किए गए और उसका कब्जा लेने की कोशिश हो रही है । तो ऐसे जो लोग हैं, कम से कम इनके बारे में सरकार को ध्यान से सोचना होगा ।

महोदय,कई वर्शिप प्लेंसेज़ खत्म कर दिए गए और उसके बाद रातोंरात रोड बना दिए गए । आरोप यह हो रहा है कि कांग्रेस की कारपोरेशन है । कारपोरेशन को पता ही नहीं, कमिशनर ने ऐनाउंस किया है कि जिस प्रकार की पी.डब्ल्यू.डी. डिपार्टमेंट है, उन्होंने आकर यह किया हुआ है या बाकी लोगों ने किया है । इसके बारे में मेरा ख्याल है कि जांच करनी चाहिए और कम से कम जो वर्शिप प्लेसेज़ है , उनको एक बार फिर से रेस्टोर किया जाए, इसके बारे में सोचना चाहिए । ज्यूडिशियल इन्क्वायरी के बारे में मैं यहां कुछ नहीं कहना चाहूंगा , आफ्टर इट इज स्टेट गवर्नमेंट प्ररोगेटिव । आफ्टर आल गुजरात में जो कुछ भी हुआ उसका राष्ट्रव्यापी असर हुआ है और इसी को मद्देनजर हमें एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इसको मद्देनजर रखते हुए मेरा यह सुझाव रहेगा कि जिस तरह 69 में हुआ था, उसी तरह एक सिंटिग सुप्रीम कोर्ट जज और उनके साथ दो हाई कोर्ट के जज, जो गुजरात से न हों, दूसरी जगहों से हों । उनका एक कमीशन बैठाया जाए, यह मेरा सुझाव होगा। दूसरी ओर एक यह भी कोशिश हो रही है कि दोनों रिपोर्टो को डीलिंक करने की कोशिश की जा रही है । जल्दी से जल्दी चुनाव हो जाएं, पहले गोधरा की रिपोर्ट आ जाए तो फायदा हो । दोनों रिपोर्टो को डीलिंक करने की कोशिश की जा रही है । मेरे ख्याल से जो भी रिपोर्ट आए, चाहे वह गोधरा की हो या कोई दूसरी हो , कम से कम उसकी डीलिंग नहीं करनी चाहिए और एक साथ रिपोर्ट आनी चाहिए । वहां पर आज बच्चे रिलीफ कैम्प में हैं । अहमदाबाद में कम से कम 700-800 बच्चे रिलीफ कैम्प में हैं, ट्रोमा में है और भयभीत हैं। 17 तारीख को उन्होंने एग्जाम एनाउन्स कर दिए हैं । मुझे नहीं मालूम कि वे कैसे एक्ज़ाम देने जाएंगे । बच्चे कह रहे हैं कि उन्हें डर लगता है। वहां एक भय का वातावरण है । लेकिन ऐसे वातावरण में कम से कम कुछ ऐसे इंतजाम करने चाहिए जिससे बच्चे भयभीत न हों । इसके लिए उनके लिए गग्जाम का अलग से इंतजाम होना चाहिए । मेरे ख्याल से इस बारे में कुछ सोचा जाना चाहिए । रिलीफ कैम्प में जो भी कैशडोल मिल रहा है, बहुत कम मात्रा में है । किसी को भी नुकसान हो । आखिर जो भी मरा है , चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो, हिन्दुस्तानी मरा है , भारतीय मरा है। जो भी खून बहा है, हिन्दुस्तानी का खून बहा है, भारतीय का खून बहा है इन्सान का खून बहा है। इस सबको ध्यान में रखते हुए, मेरे ख्याल से जिसको भी मदद मिले ठीक तरह से मिले । मैं समझता हूं कि सरकार को इसके बोर में गंभीरता से सोचना चाहिए । अभी वहां का वातावरण तनावपूर्ण है, It is like a volcano .वहां कभी भी, कुछ भी हो सकता है । फिर 15 तारीख आ गई है । जैसा अभी हमारे कुछ साथी जिक्र कर रहे थे, मुझे मालूम इसमें सरकार का क्या मन्तव्य है और वह क्या करने जा रही है। लेकिन तीन-चार या पांच दिन तक जो भी तनावपूर्ण वातावरण है, मेरे ख्याल से सरकार को इस पर गंभीरता से सोचना चाहिए । यहां यह भी कहा गया कि चाहे कोर्ट कुछ भी कहे , "We will go ahead with the programme." इसलिए जो भी सरकार का मंतव्य है, उसे वह सदन के सामने रखे और ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिए जिससे कम से कम जो तनावपूर्ण वातावरण गुजरात में हैं, वह पूरे हिन्दुस्तान में न हो । हम हमेशा इंटेलीजेंसी की बात करते हैं, इसलिए जो भी उसकी रिपोर्ट आए, उस पर इफैक्टिवली एक्शन हो जिससे हिंसा न हो, निर्दोष लोगों की जान न जाए । इसके बारे में

भी हमें सोचना पड़ेगा। जैसा मैंने कहा जो आग लगी थी, वह तो बुझ गई।

"जलते हुए घरों की रोशनी, शहरों को जगमगा चुकी,
अब तो खुदा के वास्ते दिल के दीये जलाएं।
अब न जले कोई मकान, अब न उठे कोई धुआं,
आग लगी तो बुझ गई, आग दबी बुझाएं।"

जो भी दबी हुई आग हैं , उसको बुझाने का काम हो। हम सबको संकल्प करना होगा क्योंकि कौमी हिंसा को भड़काना आसान काम है। "पिला के तो गिराना सबको आता है, मजा तो तब है, जो गिरते हुए को थाम ले।" यह काम हमको करना होगा। इसलिए हम यह संकल्प करें कि जो तनावपूर्ण वातावरण है, वह कम हो और कम से कम आने वाले दिनों में एक ऐसा माहौल बने कि हम सब एक साथ रह सकें और एक ऐसा वातावरण बने जिसमें सब यह महसूस करें कि हम सुरक्षित हैं। मेरे ख्याल से सरकार को इस बारे में कदम उठाना चाहिए। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सभापति : श्री ललितभाई मेहता।

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे (गुजरात) **:** गुजरात में तनावपूर्ण वातावरण नहीं है ...(व्यवधान)...

श्री अहमद पटेल : रूरल एरिया में जाकर देखिए , तनावपूर्ण वातावरण ...(व्यवधान)...

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे : सब लोग शंति से रह रहे हैं ...(व्यवधान)...

श्री सभापति : श्री ललितभाई मेहता।

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश) **:** जब सदन में भी मालूम नहीं है ...(व्यवधान)... तो क्या हालत होगी ...(व्यवधान)... अंदाजा लगाया जा सकता है ...(व्यवधान)...

श्रीमती शबाना आज़मी (नाम-निर्देशित) **:** वहां रिलीफ कैम्पों की जो हालत है, आप वहां जाकर देखिए। तब आपको पता चलेगा। ...(व्यवधान)...

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे : मैडम, मैं वहां जाकर आया हूं ...(व्यवधान)...

श्री अमर सिंह (उत्तर प्रदेश) **:** शर्मिंदा नहीं हो सकते तो चुप रहिए। ...(व्यवधान)...

श्री अहमद पटेल : हमें आपसे यह उम्मीद नहीं है ...(व्यवधान)...

श्री सभापति : श्री ललितभाई मेहता।

श्री ललितभाई मेहता : सभापति जी, गोधरा में *द्वारा किए गए नृशंस हत्याकांड में ...(व्यवधान)...

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी : सभापति जी, मैं इस पर सख्त आपत्ति करता हूं कि * बोलकर वे हाउस में जो इस तरह से तनाव पैदा कर रहे हैं उसके लिए मैं होम मिनिस्टर साहब से गुजारिश करूंगा कि वे इस पर कुछ कहें ...(व्यवधान)...

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल (उत्तर प्रदेश) **:** यहां पर तनाव आतंकवादियो के कारण हो रहा है, हम * की भी बात करते हैं ...(व्यवधान)... हम चुप रहे हैं ...(व्यवधान)...

श्री सभापति : देखिए, जहां किसी मजहब के नाम से आतंकवाद नहीं होगा, अगर होगा तो निकाल दिया जाएगा ...(व्यवधान)...

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तरांचल) **:** सभापति जी, मुसलिम शब्द को रिकार्ड से निकाल दिया जाए ...(व्यवधान)...

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी : आप तो मुसलमानों को ही निकालना चाहते हैं ...(व्यवधान)...

श्री ललितभाई मेहता : सभापित जी, गोधरा में आतंकवादियों द्वारा किए गए नृशंरा हत्याकांड में जिन 58 रामभक्तों की जिन्दा जलाकर हत्या कर दी गई उससे पूरी मानवता थर्रा उठी है । एक आरे इस्लामी जिहादी कश्मीर में और देश के विभिन्न भागों में हिन्दुओं के संहार में जुटे हैं तो दूसरी ओर सेक्युलर सन्नाटा भी हिन्दुओं की हत्या करने पर तुला हुआ है । गुजरात में गोधरा में 27 फरवरी की पाश्विक लीला के बाद जो प्रतिशोध की भावना भड़की उससे हम खिन्न हैं । आदमियों को जिन्दा जलाया जाना, संपत्ति लुटी जाना, संपत्ति जलाई जाना वे सब सर्वथा निंदनीय तो हैं लेकिन गुजरात के मुख्यमंत्री पर यह आरोप लगाना कि उन्होंने दंगे भड़काए, उन्होंने पुलिस को ऐसी हिदायतें दी की वे नरमी बरतें ताकि ये दंगे और आग भड़के , यह कहना भी निंदनीय है । सभापति जी, श्री नरेन्द्र मोदी जी और हमारे जैसे कार्यकर्त्ताओं का 'घरतर' जिन मनीषियों ने किया है उसमें यह कल्पना तो क्या स्वप्न में भी नहीं सोचा जा सकता कि निर्दोष नागरिकों की हत्या हो । निर्दोष नागरिकों और भारतवासियों की हत्या हमें व्यथित करती हैं, दुखी करती है और इसके कारण हमारे ...(व्यवधान)...

श्रीमती सरोज दुबे (बिहार) **:** सत्य वचन ...(व्यवधान)...

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : ये कमेंट बंद होने चाहिए । हमने चुपचाप सुना है इसलिए यह अच्छा नहीं लगता है। इससे कोई सौहार्द्र नहीं बनता जो वाहवाही कर रहे हैं ...(व्यवधान)...

---

*Expunged as ordered by the Chair,

12.00 Noon

श्री ललितभाई मेहता : सभापति जी, हमारे प्रेरणादाता तथा मनीषी स्वर्गीय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने डा. राममोहन लोहिया के साथ पाकिस्तान और भारत का महासंघ बनाने का विचार रखा था और उस वक्त , 1964 में जो निवेदन जारी किया था उसे उद्धृत करना चाहूंगा :

"हमारा स्पष्ट मत है कि हिंदुस्तान के मुसलमानों की जान-माल की रक्षा अन्य नागरिकों की भांति ही की जानी चाहिए । वह राज्य जो अपने नागरिकों को और नागरिक अपेन पड़ोसियों को जीने का अधिकार भी नहीं दे सकते वे जंगली हैं । हमारी पवित्र परंपरा रही है कि सभी मतों के नागरिकों की स्वतंत्रता और सुरक्षा को अबाधित रखें ।"

सभापति जी, गुजरात में इस कौमी तनाव के जहरीले असर के कारण हमारा सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन इतना प्रदूषित हो गया है कि हम यह कल्पना भी नहीं कर सकते कि क्या होने जा रहा है । समाज का भद्र वर्ग कहे जाने वाले लोगों की आंखें ओझल हो गई हैं , इनके विचार और बुद्धि पर पर्दा पड़ गया है । इसके कारण समाज में जिस भावनात्मक ऐक्य का निर्माण करने की बात हम चला रहे थे, आतंकवादियों से लड़ने की बात कर रहे थे, विदेशी ताकतों के सामने एकजुट होकर खड़ा होने की बात कर रहे थे, उसमें कमी आई है। इसके कारण आज कई ऐसे उदाहरण गुजरात में हमें देखने को मिले हैं जिससे हम खिन्न हैं । गुजरात में मुस्लिम समाज के संस्कार प्रदान करने वाले शिक्षक, कम्प्यूटर के निष्णांत, तदर्थ और प्रतिष्ठित व्यापारियों के नबीरे, जो अभी मक्का में हज पढ़ने गए हैं उनके सुपुत्र, न्याय देने वाले न्यायमूर्ति, धर्म की रक्षा और शिक्षा से मानव जीवन को परिष्कृत करने वाले धर्म गुरूओं ने वहां पर क्या रोल अदा किया, हमारे अनुभव में यह बातें आई हैं । मस्जिदों में से अवैध शस्त्र पाए गए । सैंकड़ों लोगों को अवैध शस्त्रो के कारण हिरासत में लेने की नौबत आई । गोला, बारूद और मौत का सामान आज भी वहां पर जगह-जगह पर मिल रहा है । ऐसी घटनाएं हमारे सामने हैं कि प्रतिशोध के कारण हमारे हिन्दू परिवारों के प्रतिष्ठित नागरिक,वकील,डाक्टर,अध्यापक,शिक्षक,यहां तक हमारी महिलाएं और बहनें विस्फोटक और सर्वसंहायक कौमवाद की शिकार हो गई हैं । यह परिस्थितियां हमें देखने को मिली है । दूरदराज के गांवों में वर्षो से साथ रह रहे हमारे बंधु एक दूसरे के खून के प्यासे हो गये हैं । ऐसी परिस्थिति आज गुजरात में बनी हुई है । ऐसी स्थिति में देश की सर्वोच्च संस्था संसद् में एक ओर हम यह बात कहें कि कांग्रेस के जमाने में कितने दंगे हुए थे, उस समय कितने लोग मरे थे, उस समय कर्फ्यू कितने महीनों तक चला था, उस समय हिन्दुओं को ही ज्यादा क्यों शिकार होना पड़ा था, उस समय कांग्रेस की सरकारें भी विफल रही थी । दूसरी ओर आज विपक्ष में बैठे हुए हमारे मित्र हमको यह कह रहे हैं कि नरेन्द्र मोदी की भारतीय जनता पार्टी की सरकार में गुजरात में ज्यादा लघुमति के इन्सान मरे, पुलिस अकर्मण्य रही, केन्द्रीय गृह मंत्री समय पर वहां पर नहीं गये, लश्कर को समय पर तैनात नहीं किया गया, ऐसी बातें कह कर आज नरेन्द्र मोदी जी की सरकार को हटाने की बात की जा रही है, गृह मंत्री जी का इस्तीफा भी मांगा जा रहा है । देश की जनता संसद् में बैठे हुए हम सब से यह अपेक्षा नहीं करती कि ऐसी बातें कह कर के आज संसद् की गौरवपूर्ण गरिमा को कम कर करने का प्रयत्न करें । अपेक्षा यह है कि ससंद् पूरे देश की दिशा निर्देश दे । राष्ट्र की एकता को सुदृढ़ करने

के लिए अपनी समस्त निष्ठाएं हम राष्ट्र को समर्पित करें। नागरिकों की सोच और प्रवृत्ति ऐसी बने कि देश के प्रति वफादारी और राष्ट्र के प्रति निष्ठा सर्वोच्च है और इसको सुद्दढ़ बनाने में देश की पहचान को समझने और सुद्दढ़ बनाने का हम प्रयत्न करें । देश की पहचान की जब मैं बात करता हूं तो मैं पंडित नेहरू जी की वह पंक्तियां यहां पर कोट करना चाहूंगा । पंडित नेहरू जी ने यह कहा था-

> "Since thousands of years, the chain of life has continued and I am proud that I am also a link of that chain. I don't want to separate myself from that chain."

प्रत्येक भारतवासी को पंडित नेहरू की इस बात को समझना होगा । इसके अनुसार यह बात हमें जीवन में व्यवहार में लानी होगी । इस देश में हम राष्ट्र के स्वाभिमान को जगाने का आह्वान करें, यह ससंद् से हर भारतवासी की अपेक्षा है। हमारे मित्र आज़मी जी ने पूरे मुस्लिम समाज की ओर से बात कही, ऐसा मुझे नहीं लगता । लेकिन इस देश में यह सच है कि कई ऐसे तत्व हैं जो इस देश की मूल धारा से जड़ने की बात नहीं करते हैं उससे अलग रहने की बात करते हैं । मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या यह सच नहीं है कि पिछले पांच सात दिन पहले बकरीद के त्यौहार पर भडौंच जिले के पालेज तालुका के टंकारिया गांव में सैंकड़ों की संख्या में गउओं और बछड़ों का वध खुले आम किया गया, और वहां पर गौमांस की रसोई बनाई गई? एक हजार के छोटे से गांव में 15 सौ लोग हल्ला बोल देते हैं और पुलिस वहां पर जाती है तो उनकी राइफलें छीन ली जाती हैं, उन पर हमला बोल दिया जाता है। सभापति जी, यह मेरे पास तस्वीरें हैं जिसमें खुले में गायों के शव पड़े हैं, बछड़ों के शव पड़े हैं, सैकड़ों गायों की हत्या करदी गई। गुजरात में गोवंश हत्या पर प्रतिबंध होने के बावजूद यह वारदातें की जा रही हैं । क्या यह बातें हमें साम्प्रदायिक सद् भाव बनाने में मदद देंगी? हमारी एकता बनाए रखने में और सुद्दढ़ करने में मदद देगी?

सभापति जी, मैं एक और बिंदु पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। गुजरात में पिछले पांच सालों में अवैध रूप से जितना हथियार गोला बारूद पकड़ा गया है उसका ब्योरा हमारे पास है । यह वहां पर आई जी ने मुझे इन्फरामेशन दी है। 517 कंट्री मेंड बम और 53 फारेन मेड बम. 888 कंट्री मेड गन्स एण्ड 117 फारेन मेड गन्स, 13 एके 47 और 56 एके 58, 1557 कंट्री मेड तमंचे और 39 फारेन मेड तमंचे, 1095 कंट्री मेड रिवाल्वर और 251 फारेन मेड रिवाल्वर, 87कंट्री मेड पिस्तौलें और 492 फारेन मेड पिस्तौलें तथा 30,591 कारट्रिज – ये पिछले पांच सालों में गुजरात में पकड़े गए। जो पकड़े नहीं गए, वे कितने होंगे यह हमें पता नहीं। लेकिन यह मौत का सामान कौन ला रहा है? ये एजेंट कौन हैं? ये हथियार कहां उपयोग में लाने हैं, किसके लिए हैं, किनके सामने ये उपयोग में लाने हैं? हमारे पास आंकड़े हैं कि 2358 लोग ऐसे अवैध शस्त्रास्त्रों के व्यापार में, लाने ले जाने में, मौत का सामान खरीदने में और लोगों को तहस नहस करने में जुटे हुए हैं। सभापति जी, मैं यह बात आपके सामने रखूंगा कि सिमी के 123 लोग आज सूरत की जेलों में बंद हैं । सूरत के ही एक प्रमूख राजकीय कार्यकर्ता जो गुजरात के मंत्रिमंडल में मंत्री रहे हैं मुहम्मद सुरती, इनका रोल क्या है? भड़ौच के आदम मीठा का रोल क्या है, भड़ौच के ही हाजी रफीक क्या करते हैं ? अहमदाबाद क नवाब खान, गज्जू खान क्या करते हैं? इन्दोर का महमूद खान क्या करता है? इन सब कुख्यात लोगों का इन सब चीजों के साथ, इन सबके

साथ क्या कोई संबंध है, यह सब हमें तलाश करना पड़ेगा। ट्रक के टायर में भी 6 करोड़ की हेरोइन और 25 चाइनीज पिस्तौलें अभी –अभी गुजरात में पकड़ी गयी हैं। कौन हैं ये लोग? ये सब क्या करना चाहते हैं? आज हम सब गुजरात के बारे में चिंतित हैं। सभापति जी, मेरा इतना ही संसद से, सदन से निवेदन रहेगा, आपसे निवदेन रहेगा कि गुजरात की घटनाओं के कारण, जो अप्रिय घटनाएं हैं उनको राजकीय मुद्दा बनाकर सत्ता की सीढ़ी पर जाने का प्रयास करने वाले जो लोग हैं उनको हम देख लें और समझ लें। गुजरात में शांति और सदभावना स्थापित करने के संबंध में इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया के बारे में कुछ बातें कही गयीं। गुजरात में जन्मभूमि ग्रुप का जो एक अखबार निकलता है उन्होंने 50 सभी धर्मो के संत-महंतों को राजकोट मे बुलाया और शांति पद यात्रा निकाली, सदभावना यात्रा निकाली। यह पुरूषार्थ का रोल किया। अखबार का रोल कैसा रहना चाहिए, यह गुजरात के जन्मभूमि अखबार से हमारे अखबार के लोग, हमारे इलेक्ट्रानिक मीडिया के लोग सीखें तो अच्छा होगा। गुजरात में राहत की द्दष्टि से, बचाव की द्दष्टि से जो अनेकों बातें की गयी हैं, उनका उल्लेख नहीं करना चाहूंगा। लेकिन पर्याप्त मात्रा में कैम्पस लगे हैं, जितने भी नागरिक असरग्रस्त हुए हैं उनको पर्याप्त मात्रा में राहत सामग्री पहुंचाई जा रही है, उनके पुनर्वसन का काम किया जा रहा है। गुजरात की सरकार ने व्यापारियों के लिए, उद्योगपतियों के लिए पूरा-पूरा पैकेज डिक्लेयर किया है और उस पैकेज के तहत सभी को आर्थिक सहायता पहुंचाने की घोषणा भी कर दी है तथा गुजरात के जनजीवन को फिर से सक्रिय रूप देने का प्रयास वहां पर स्तुत्य रीति से हुआ है। यही बात कहकर मैं अपनी बात समाप्त करूंगा। आभार।

† **मिर्जा अब्दुल रशीद** (जम्मू और कश्मीर) **:** थैंक्यू चेयरमैन साहब, आज गुजरात की इस डिबेट पर आपने मुझे टाइम दिया, आपका शुक्रिया।

मैं यूं शुरू करूंगा –

"कैसा बदला है रंग जमाने का, अपने –अपने पर वार करते हैं
पहले मरते थे गैर अपनों से, अब तो यारों से यार मरते है"।

गुजरात पर पिछले साल ही अल्लाहताला की तरफ से कहर नाजिर हुआ, एक जलजला आया। रातों रात वहां पर एक कयामत बरपा हुई। रात को सोया हुआ करोड़पति सुबह जब बचा भी तो भीख मांगने पर मजबूर हो गया। हजारों लोग अपने मुहल्लों के मलबे में दफन हो गए। लेकिन क्या हमने इससे कोई सबक सीखा, कोई इबरत हासिल की, कोई अपने अंदर को जगाया? तो लगता है कि हमने कुछ नहीं सीखा और हमें अफसोस है कि

"आदमी को मयस्सर नहीं इन्सान होना वहां"।

दुख की बात यह है कि जिस धरती पर यह हो रहा है – बापू, महात्मा गांधी के देश में नहीं उनके घर में, उनकी जन्म भूमि के अंदर घुसकर ये धज्जियां जो उड़ायी जा रही हैं इन्सानियत और आदमियत की, यह बड़े दुख की बात है। यह बड़े दुख की बात है कि महात्मा जी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए अपने खून की कुर्बानी दे कर हिन्दू-मुस्लिम इत्तिहाद को कायम

†Transliteration of the speech in Persian Script is available in the Hindi version of the Debate .

रखा, आदर्शों को कायम रखा, लेकिन उसी धरती में आज यह हो रहा है। इसे देखकर उनकी रूह भी तड़पती होगी । यह कहने पर मुझे अफसोस है कि साबरमती एक्सप्रैस का जो गोधरा में वाकया हुआ , उन वहिशी दरिंदों ने जो हादसे किए , जो सानेहा किया, उसकी जितनी भी मजम्मत की जाए वह कम है । लेकिन अगर यह कहा जाए कि यह वाकई अकलियती ग्रुपों का, अकलियती लोगों का यह अमल है तो मैं उनसे यह पूछना चाहूंगा कि अल्लाहताला ने तो यह फर्माया है कि बिला उजर अगर एक भी जानदार को कत्ल किया जाए तो वह सारे यूनिवर्स को कत्ल करने के बराबर है। यह कुरान-ए-करीम में अल्लाहताला ने साफ तौर पर सारी कार्यनात के लिए फर्माया है। अगर यह सच है तो क्या वे अल्लाहताला के हुक्म की पैरवी कर रहे हैं? हम चाहेंगे कि एक हाई पावर कमीशन से उनकी इन्क्वायरी करा कर मुजरिमों को सारी दुनिया के सामने फांसी दी जाए ताकि दुनिया में और खास कर कौम के दिलों से शक और गुस्सा दूर हो और इंसान के दिल फिर आपस में जुड सकें । उसके बाद जो असल आज़मायश या इम्तहान शुरू होता है, साबरमती एक्सप्रैस के हादसे के बाद, वह गुजरात की सरकार का, गुजरात की पुलिस का, गुजरात के एडमिनिस्ट्रेशन का शुरू होता है और उसी में एक आज़मायश होती है हमारे हिन्दुस्तान की शक्ति की, भारत की शक्ति की, इसकी परंपरा की और भक्तों की भक्ति की । इनके धरती के वासियों की मुक्ति प्रीत में है। उस सिलसिलें में मैं यूं गुजारिश करूंगा कि जहां तक वहां के पुलिस चीफ का जैसे जिक्र किया गया है कि वहां के पुलिस चीफ खुद कहते हैं कि पुलिस के भी जजबात होते हैं, पुलिस के भी सेंटीमेंट्स होते हैं। तो इसका मतलब क्या है? पुलिस तो होती है सेंटीमेंट्स को कंट्रोल करने के लिए, जनता के हुजूम के सैलाब को रोकने के लिए, उन पर पानी छिड़कने के लिए, उनको ठंडा करने के लिए, न कि उन पर पेट्रोल डाल कर जलती पर तेल डालने का काम करने के लिए , यह पुलिस का काम नहीं हुआ करता है। हमें अफसोस है कि जिस वक्त कानून के मुहाफिज या कानून के रखवाले खुद कानून की धज्जियां उड़ायेगें तो इस मुल्क का क्या होगा और वह दिन इस मुल्क के लिए कितना बुरा होगा? इसी तरीके से जिस वक्त वहां पर एक्स मैंबर ऑफ पार्लियामेंट श्री जाफरी जो थे, जिन पर पुलिस चीफ ने यह इलजाम लगाया कि उसने पिस्तौल से गोली चलाई तो भी बीस हजार लोगों का हुजूम जो था वह रूक नहीं सका एंड ही वाज रोस्टेड एलाइव, उनको जिंदा जलाया गया, उनके खानदान को जिंदा जलाया गया । उसके बाद जो उनकी भागी हुई, बची हुई बेवा थी, उसने जब बयान दिया तो उसने रो-रो कर यह कहा कि यह सरासर गलत है । तो आज हम पूछना चाहते हैं , सरकार से और उस पुलिस चीफ से कि आपके पास इसका क्या जवाब है, हम दुनिया को क्या जवाब दें? जहां तक इस मुजरिमाना फेल का ताल्लुक है, वहां के एडमिनिस्ट्रेशन का ताल्लुक है और उस मुजरिमाना फेल के साथ-साथ मैं यूं कहूंगा कि सैंकड़ों लोगों को जिंदा जलाया गया और खास कर अकलियती फिरके को चुन-चुन कर उनकी गाड़ियों , उनकी दुकानों, उनके मकानों, उनकी मस्जिदों को, उनकी खानकाहों को या उनकी फैक्ट्रियों को जलाया गया तो ये सारे हालात जो हैं ये सिर्फ हमने ही या कौम ही ने नहीं देखे बल्कि सारी दुनिया ने देखें हैं, उस सारी दुनिया ने जो आज के साईंस के जमाने में एक सिकुड़ता हुआ छोटा सा विलेज बन चुकी है। इसलिए यह सारी दुनिया की नजरों मे आया है कि इस हिन्दुस्तान को क्या हो गया क्योंकि यह जो जल रहा था यह किसका लहू था और कौन मरा? यह एक हिन्दुस्तान जल रहा था, एक हिन्दुस्तानी मर रहा था और हिन्दुस्तानी ही मार रहा था । इसलिए ये चीखें जो उठ रही थीं ये भारत की चीखें थीं और भारत की आत्मा की चीखें थीं। तो मैं यही कहूंगा कि इस सिलसिले में एक हाई लेवल कमीशन से इसकी इन्क्वायरी कराना बेहद जरूरी है , जैसे कि गोधरा के इंसीडेंट की इन्क्वायरी

कराना बेहद जरूरी था। मैं यह कहूंगा कि राम जी तो हमेशा अस्मत को बचाने के लिए जंग लड़तें थे, बुराई के खिलाफ जंग लड़ते थे और बुराई के खिलाफ सजा देते थे फिर ये तो राम भक्त हैं, ये ऐसा क्यों करते हैं? यह देख कर मुझे किसी की एक शेर याद आ गया,

"एक कुत्ता कह रहा था, दूसरे कुत्ते से कल,
भाग वरना आदमी की मौत मारा जाएगा।"

तो आज वह इंसान इतना नीचे हो गया है कि जिस बंदे के सामने, जिस इंसान के सामने अल्लाहताला ने फरिश्ते को भी झुकाया, फरिश्ते को भी सजदा करवाया, आज हमारी हरकतों से हम जानवरों से भी बदतर शुमार किए जाते हैं। यह भी सच है कि आज उसी रियासत में "करे कोई और भरे कोई" , अगर किसी ने गलती की तो सजा दूसरे को मिले। रहीम ने जुर्म किया और रहमान को सजा मिले तो यह तो बड़े अफसोस की बात है। इस मुल्क की कांस्टीटयूशन की धज्जियां उड़ाई गयी हैं, इस मुल्क के भाईचारे को तार-तार किया गया है, इस मुल्क की शानदार तारीख को मसर किया गया है और यह मुल्क जो हमेशा हिन्दुस्तान में सालसी करता था। दुनिया में जाकर जालिमों को मिटाने के लिए, दुनिया में आजादी दिलाने के लिए, लेकिन आज इस मुल्क मे आग लगी है जिस में वह झुलस रहा है। फिर भी हमारे लिए खुशी की बात है कि हमारे प्रधान मंत्री जी ने कहा कि गुजरात के जो ये वाकयात हैं, हरकात हैं, ये मुल्क पर एक कलंक है, बदनुमा दाग है। यह सौ सवालों का एक जवाब है और हमारे होम मिनिस्टर ने भी कहा है और वहां की सरकार को फटकार दिया है कि उस की लापरवाही है। अब कौम भी देखना चाहती है और दुनिया भी देखना चाहती है कि उसका हम क्या रिजल्ट निकाल रहे हैं और क्या ये उन लोगों को जो मुजरिम हैं गोधरा की इंसीडेंट के या गोधरा की इंसीडेंट के बाद गुजरात में फैले जो फसादात हैं, वहशी या जानवर की तरह जिन्होंने इंसानों को जलाया, उन को फांसी दिलवाने तक ये दुनिया देख रही हैं। जब तक दूध का दूध और पानी का पानी अलग नहीं होगा, लोगों के दिलों में जो यह आग लगी है, बुझ नहीं सकेगी। हम ये चाहेंगे कि इस आग को बुझाया जाय।

रहा सवाल यह कि गुजरात के इस वाकये ने जम्मू काश्मीर की रियासत के लिए और ज्यादा मुश्किलात पैदा कर दी हैं क्योंकि जम्मू काश्मीर की रियासत में जैसे सभी जानते हैं, सारा हाउस जानता है कि पिछले 50 साल से दो कौमी थ्योरी की जंग जारी है और उस दो कौमी थ्योरी की जंग के सिलसिले में वहां प्रोक्सी-वार भी है और दहशतगर्दी की जंग बदस्तूर जारी है और नस्ले-इंसानी के खून से वहां की धरती नहाई हुई है, लेकिन इस के बावजूद उस वक्त शेर ए काश्मीर ने दो कौमी थ्योरी को रद्द किया। जिन्ना साहब की थ्योरी को रद्द किया और महात्मा गांधी की अकसरियत और उन की जम्हूराना पॉलिसी को पसंद किया। उस वक्त जो रेहरू जी थे, उन की आवाज को सुना और लियाकत अली की ललकार को रद्द किया। तो आज यह एक सवालिया निशान बन गया है और लोग पूछते हैं इस वक्त कि क्या शेर ए काश्मीर का यह फैसला कहीं गलत तो नहीं था? इसलिए हमारे लिए और ज्यादा मुश्किलें पैदा हो चुकी हैं और जिस वक्त वह देखते हैं कि किस तरीके से गुजरात में अकल्लियती फिरके को चुन-चुनकर जलाया जा रहा है, मिटाया जा रहा है तो हमारे पास कोई जवाब नहीं रह जाता है कि हम उन को किस तरह से कनविंस करें। इसलिए हम चाहतें हैं कि इस किस्म के हादसात दोबारा ने हों क्योंकि जम्मू काश्मीर की सरकार के लिए वे ज्यादा मुश्किल साबित होंगे। हम आप को यह सजेस्ट करना चाहते हैं कि इस वक्त जो हालात हुए हैं, ये किसने किए, क्यों हुए, कैसे हुए, इस की जो इब्तिदा है, उस की जो जड़ है, उस का इलाज हमें करना है। उस का इलाज सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले

से करें, उस का इलाज बाहमी तस्वीर से करें, लेकिन उस का इलाज जरूरी है। अगर इसको जारी रखा जाएगा तो न सरकार बच सकेगी और न मुल्क बच सकेगा । मेरी एक तजवीज है कि जिस तरीके से भी हो, इस इश्यू को लंबा न किया जाय, इस को बायलिंग पॉट बनाकर न रखा जाय । इस का हल ढूंढा जाय । जितनी जल्दी इस का हल ढूंढा जाएगा, उतना ही मुल्क के लिए ठीक रहेगा, मुल्क की एकता के लिए ठीक रहेगा। दूसरे इस वक्त जो वहां उजड़े हुए लोग हैं, उन को बसाने के सिलसिले में, जो दर्दमंद हैं उन की दवाई के सिलसिले में, उन को मोहब्बत की जरूरत हैं, उन के दिलों को जोड़ने की जरूरत है, मरकजी सरकार या कोई भी सरकार उन से जितनी मोहब्बत करेगी, उन के दिल से जुड़ जाएंगे। उन का आपस का जो सेल्फ-कांफिडेंस खत्म हो गया है, यह कांफिडेंस उन को रिबिल्ट करने का एक मौका है। इस वक्त मैं सजेस्ट करूंगा कि न प्रो-हिंदू होकर हुकूमत करने की जरूरत है और न प्रो मुस्लिम होकर **हुकूमत** करने की जरूरत हैं । **यहां प्रो हिन्दुस्तानी होकर ही जिंदा रहने की जरुरत है और हुकूमत करने की जरुरत है** तो मैं ज्यादा वक्त न लेकर एक ही गुजारिश करूंगा से कि ये नफरतें , ये दूरियां हुई हैं, इन को कैसे जोड़ा जाय। आज भी हमारे भारत में 98 परसेंट हिंदुस्तानी ऐसे लोग हैं जो देश की एकता के लिए मरने-जीने को तैयार हैं, जिन के दिलों में आज भी पुरानी सारी पंरपरा है । सिर्फ एक परसेंट या दो परसेंट गुंडों या मुजरिमों से हमें मायूस नहीं होना चाहिए । अलबत्ता उन को इस्तेमाल कर के इस हिन्दुस्तान के शीराजे को बिखेरने न दिया जाए । अगर नाइंसाफी हुई, तो ये जो कहा है कि –

"यूनानों, मिस्त्रों, रोमा मिट गए जहां से, अब तक मगर है बाकी, नामो निशां हमारा।"

इंसाफ की बदौलत हमेशा हिंदुस्तान एक रहा है और हमेशा एक रहेगा । वह इंसाफ इस मरकजी सरकार से भी और स्टेट की सरकार से भी मिलना चाहिए वरना आज महात्मा गांधी, जिन के घर में या जिन की भूमि में यह हादसा हुआ है, ये इंसानियत सोज हरकतें हुई हैं, आज उन की रूह उन वहशी लोगों से एक सवाल करती है कि:

"तुम्हारी शरपंसदी से जले हैं कितने घर देखो,
कटे हैं कितने सर इस का तुम्हें एहसास क्या होगा,
बहाओं खून सड़कों पर, मगर इतना जरा सोचो वतन जब खून मांगेगा,
तुम्हारे पास क्या होगा।"

थेंक्यू।

श्री आर.एन. आर्य (उत्तर प्रदेश) **:** धन्यवाद, सभापति जी । गुजरात के इस हादसे में जो वहां नरसंहार हुआ, उस पर इस माननीय सर्वोच्च सदन में दोनों पक्षों की ओर से जो विचार हो रहा है, उसमें मैं अपनी बात रखने के लिए खड़ा हुआ हूं । 24 फरवरी को गोधरा में जो साबरमती का कांड हुआ, जिसमें स्त्री-बच्चे, जो भगवान का रूप होते हैं , उनको जिंदा जलाया गया, वह एक दिल दहलाने वाला कांड था। इसको सारे देश ने देखा और उसके बाद गुजरात में जो हुआ, वह भी सबके सामने हैं, जिसका वर्णन यहां माननीय सदस्यों ने अपने हृदय से किया है।

सभापति जी, 24 तारीख से लेकर अब तक जो मृतकों की आवर्ती सूचनाएं देखने को मिली हैं, उसके अनुसार यह 58 से लेकर 658 तक हुई है । देखने में यह आया कि जो ट्रेन में हुआ, उसका असर शहरों मे फैला और शंहरों के बाद गांवों तक यह फैला । गुजरात के एक गांव,

जिसका नाम अजन्मा है, उस गांव में 600 लोग मिलकर गए और निरीह लोगों को मारा, जिनमें 6 लोग मारे गए और स्त्री-बच्चों ने कुओं मे कूदकर अपनी जान दी। जहां ऐसी स्थिति पैदा हो गई हो, लोगों को बचाने वाला अपना कोई न मिल रहा हो, वहां ऐसी घटना क्यों घटी,**इस पर विचार होना चाहिए। मैं माननीय सदन के माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि ऐसी घटनाओं** पर मानवता के नाते दल और धर्म से ऊपर उठकर सोचा जाना चाहिए, इस बात को दल और धर्म से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। जब ऐसी घटना होती है तो कोई यह सोच नहीं पाता कि कौन अच्छा इंसान है और कौन बुरा, बस मारे चले जाते हैं । इस पर जरूर विचार करने की जरूरत है। इस प्रतिशोधात्मक,प्रतिक्रिया तो यह है, लेकिन प्रतिशोधात्मक प्रतिक्रिया पर शैतानियत और हैवानियत का जुनून जो गुजरात में फैला, अहमदाबाद, सूरत और बड़ौदरा में जो घटनाएं हुई , उसके बाद जो मृत्यु आवर्ती देखने को मिलीं, उसके अनुसार 25 तारीख को 58, 26 तारीख को 100, 27 तारीख को 100, 28 तारीख को 100, 1 तारीख को 100, 2 तारीख को 100, अर्थात् मृतकों की संख्या बढ़ती चली गई। जो डैड बाडी मिली हैं , उनको भी देखने से ही पता चला की सौ, सवा सौ हिसाब से प्रतिदिन मृतकों की संख्या निकल रही हैं । मैं इस विषय पर ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहता, सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि किसी सरकार विशेष को या धर्म विशेष को या आपस में एक-दूसरे को कुछ कहने से कोई काम नहीं चलेगा बल्कि इसमें पूरे सदन के हम सब लोगों को आपस में बैठकर सोचना चाहिए कि किस तरह से मानवता की चरम सीमा से बाहर जाकर यह घटनाएं हो रही हैं क्योंकि कल हमारे ऊपर भी ऐसा हो सकता है । किसी भी प्रदेश में अगर ऐसा होता है तो यह वहां की सरकार की जिम्मेदारी तो है ही, लेकिन हमारी सामूहिक जिम्मेदारी पर भी विचार होना चाहिए ।

"मुसलमां यह समझा कि काफिर हैं यह।
काफिर यह समझा कि मुसलमा हो गया।
इंसान इस हैवानियत में न जाने कहां खो गया ।"

इसमें हमें एक सही रास्ता ढूंढना है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको पुनः धन्यवाद देता हूं ।

SHRI R.S. GAVAI (Maharashtra): Mr. Chairman, Sir, at the outset, I strongly condemn the massive brutalities committed at Godhra, and thereafter, in many parts of the State of Gujarat. My first submission will be that these brutal incidents no doubt indicate the magnitude of brutalities and cruelities committed against a large number of human beings.

I have yet to say that that indicates that we have killed the humanity totally. Sir, of course, some sections are of the opinion that the incidents at Godhra correlate to the incidents that happened, thereafter, in many parts of Gujarat. But I personally feel that their thinking is irrelevant, illogical and irrational. I am giving the reasons. Number one; the State Government of Gujarat said that whatever happened in Godhra was preplanned, and not a sudden provocation, and some anti-social elements and

some terrorist movements were also behind it. How is it befitting to say that it could be a reaction to the Godhra incident? If this has happened with the knowledge of the Chief Minister and the Government of Gujarat, why were they silent? Why were precautionary measures not taken, to prevent such cruel and inhuman incidents at Godhra? The responsibility lies with the Government of Gujarat, and none else. How long are they going to say 'it was action-reaction-andcounter-reaction? This is a vicious circle which will, ultimately, kill the entire humanity. At least, the people, having a rational and logical thinking, should not use this kind of terminology of 'action, reaction and counter-reaction'. We have to stop them from using it. Sir, it is, rather, unimaginable that, in the initial stages, for two or three days, the whole Gujarat State was handed Over to the anti-social elements! I do not want to name the organization. Everybody knows. That allowed the free looting, the killing, brutal killing, -and burning of the people in the broad daylight! Forget about the measures. Is it not a stigma on the nation? How is it befitting to speak about the unity and integrity of the nation? It goes against the spirit of humanity that men, women and children were burnt alive in broad daylight! Certainly, it is the killing of the humanity. I am much more aggrieved; I do not want to make a political speech by demanding the resignation of the Gujarat Chief Minister. If he has a feeling for the humanity, he should come forward and take the moral responsibility saying, "Here, I tender my resignation." He had failed to maintain law and order in the State and had, virtually, handed over the whole State to the anti-social elements. Sir, I quote the words of the Prime Minister. On this occasion, he said, "This is a criminal negligence. I am shameful. It is a stigma on the State Government of Gujarat." Merely making statements will not serve the purpose.

Is it not the responsibility of the Prime Minister and the Home Minister to fix the accountability and that too the accountability of the Chief Minister of Gujarat? He failed to maintain the law and order situation and protect the lives and properties of the innocent people.

In conclusion of my speech, I come to the overall situation in the nation. We are going through a very grave crisis, a crisis which is known to the Indian people this way or that way. The theory "eye for eye" and "tooth for tooth" is irrelevant to the cause of national unity and integrity. These are the days when we should get rid of this thinking and logic, and rise above the narrow politics and thinking to maintain the integrity and unity of this great nation.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI L.K. ADVANI): Mr. Chairman, Sir, I share the agony and anguish of all Members of this House and those who have commented on the events in Gujarat, starting from 27th February till the first week of March. As the Prime Minister has rightly said, these happenings are a matter of shame for us. They have certainly affected India's reputation in the world, particularly, in these days, when we have been battling against terrorism. At the outset, the response of the world was not as we would have liked it to be, though formally they were appreciating our concern, and they were even setting up Joint Working Groups, against terrorism along with India. But, after the n* September experience, there was a sea-change in the thinking of the world towards the problem of terrorism. This is also true that they related it to the growth of religious fundamentalism in some parts of the world. I feel sad that the happenings in Gujarat; during the past fortnight, may make those who are not fully familiar with India and the Indian ethos, to equate the two. It would not be right. Absolutely, it would be wrong. Though the allegation against us, when we were in the Opposition, used to be that ours is a communal party and if it comes to power the minority would be at a disadvantage, the fact is that in the last four years, when we have been in Government, we have been able to govern the country in such a manner as to make the number of communal incidents in the country to the minimum compared to many, many, years, at least, the last decade. It used to be a matter of pride when you used to say it. I am sorry that hereafter, we cannot say it. After the Gujarat events, *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: Let him complete.

SHRI L.K. ADVANI: I am saying that it is a matter of distress for all of us; but, for us, who are in the Government, it is even more distressful because the claim, which we have been making, has in a way been stained. इसीलिए अगर धब्बा किसी ने कहा तो सही बात है। देश के लिए तो इतनी बड़ी घटनांए शर्म की बात हैं। देश का इतना बड़ा इतिहास है उसमें बहुत सारी अच्छी बातें भी हैं। लेकिन these happenings in Gujarat, are, certainly, a black mark. I can only say that there is a tendency to be selective in our reactions, which is not right. Some focus entirely on Godhra, on the Sabarmati Express, and the reference to other events is incidental. On the other hand, some focus entirely on what followed Godhra, and the reference to Godhra is formal. I would say that the incidents which have taken place, whether at Godhra or at Naroda or at that colony where our former Member of Parliament and his family were

burnt alive; all these are shameful incidents. Kitting of innocent people because of their religion, because of their community, is wrong. It cannot be rationalised. You cannot say that this was a reaction to a particular action, and, therefore, it is justified. You cannot say that also, i have heard people saying this also; they were shouting slogans and, therefore, there was an attack at Godhra. All these things are, as I said, selective reactions. The situation does not permit us to indulge in this luxury of selective reactions. Communal violence is wrong. This has to be stopped. Therefore, as regards most of the things that were said so far as this violence is concerned, I can hardly differ. The Government does not differ from this. If it does differ, it differs from the allegations that have been made against the police, against the administration. Frankly, I did speak to the police authorities and I questioned them; I asked that particular police officer whether he said, "After all, policemen also have their emotions." To this, he explained, "There could have been some stray instances and, in that context, I said that the policemen also are humans and there could have been aberrations." He said, "It is an aberration" and that, in that context, he used the word 'emotions'...*(Interruptions)...*

SHRI NILOTPAL BASU: It was telecast several times...

MR. CHAIRMAN: Let him complete...*(Interruptions)...*

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: Did you understand what he was saying? ...*(Interruptions)...*

SHRI L.K. ADVANI: I am only telling you...*(Interruptions)...*

श्री सुरेश पचौरी : सभापति जी, मैं विनम्रतापूर्वक गृह मंत्री जी से यह आग्रह करना चाहता हूं कि जब वह स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि उस पुलिस अधिकारी ने कहा कि हां, आखिर उनमें भी यह फीलिंग हो सकती है तो मैं आपसे यह जानना चाहूंगा कि इतने जिम्मेदार पद पर रहते हुए वह व्यक्ति ऐसे नाजुक समय में इस प्रकार का वक्तव्य देता है और अभी तक आपने उसके खिलाफ क्या कार्रवाई की है?

SHRI L.K. ADVANI : Mr. Chairman, Sir, I am only about to tell you that if, in the course of inquiries that are going on, something of that kind comes up that he did not use the word aberrations', he only said what you are saying, the consequences would be there. But what I am saying is that I myself felt perturbed and, therefore, I confronted him with this, and, here, I

have a long list of incidents where the Police have saved so many people; so many examples are there. Even in that Gulmarg Society in Chamanpura, which comes under the Meghanipura Police Station and where Ehsan Zaffri and his family were burnt alive -- there were 19 houses which were burnt there; in one of those houses, Ehsan Zaffri was there; his family was there; they were burnt alive -- 180 people were rescued from that colony. There are so many other incidents of this kind. *...1/nterruptions)...*

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: Mr. Home Minister, 'no'. You are misleading the House. You see, there also, the Police said that Zaffri had fired and that is why this violence .... *1/nterruptions)...* Listen to me.

...Interruptions)...

SHRI L. K. ADVANI: Please. I am referring to that... (Interruptions)

श्री कलराज मिश्र : सभापति जी, गृह मंत्री जी के भाषण के बाद वह अपना स्पष्टीकरण पूछ सकते हैं। ....(व्यवधान)...

SHRI HANSRAJ BHARDWAJ: The Police Chief said that... ... *1/nterruptions)...*Even the Chief Minister of Gujarat said that he had fired. *...1/nterruptions)...*

श्री कलराज मिश्र : सभापति जी, गृह मंत्री जी के बयान के बाद वह स्पष्टीकरण मांग सकते हैं। ...(व्यवधान)...

श्री संघ प्रिय गौतम : आप सुन लीजिए। ...(व्यवधान)... आप बैठ जाइये। ...(व्यवधान)...

SHRI NILOTPAL BASU: Please do not adopt a selective approach in describing the incidents. *...1/nterruptions)...* What you are pleading with us...

SHRI L. K. ADVANI: I am not pleading. I have condemned violence in an unqualified manner. I have not distinguished between Godhra and the happenings in Ahmedabad or in Rajkot or in Baroda or elsewhere. I am certainly not doing that. But I am certainly saying that here is a situation; I have seen all the records of the earlier riots, and I have not seen a single riot in which more than 100 persons have been shot dead by the Police in police firing. This is the first incident of its kind. *...(Interruptions)...*

SHRI NILOTPAL BASU: There also, the victims were of... *...(Interruptions)...*

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: Let him complete. *..(interruptions)...*

SHRI NILOTPAL BASU: 70 per cent of the victims were of the minority community. *...(interruptions)...*

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : आप शबाना जी को बोलने दीजिए । शबाना जी आप बोलिए। शबाना जी आप बोलिए, मैं सुनूंगा। ...(व्यवधान)...

श्रीमती शबाना आजमी : सभापति जी, मैं एक क्लेरिफिकेशन यह चाहती हूं कि जो 98 लोग पुलिस फायरिंग में मारे गये, उनमें से कितने मेजोरिटी कम्युनिटी के थे और कितने माइनर कम्युनिटी के थे? जो 900 लोग पकड़े गए हैं , उनमें what is the percentage of the majonity and the minority ?

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : आप यह जानना चाहेंगी? वैसे मैं हिन्दू-मुसलमान में नहीं जाता, क्योकि किसी ने टेलीविजन कर कहा कि इसमें 70 परसेंट मुसलमान हैं । इसीलिए जब मैं कल गया था जब मैंने यह फिर से पूछा। मेरी जानकारी में हिन्दू और मुसलमान अलग-अलग, कौन-कौन, कितने मरे, इसकी गिनती करना मैं वैसे ही गलत समझता हूं। चूंकि यह आरोप लगाया गया है इसलिए मैं इतना ही कह सकता हूं कि अल्पसंख्यक की संख्या कम है और बहुसंख्यक की संख्या ज्यादा है। ...(व्यवधान)...

श्रीमती शबाना आज़मी : पुलिस फायरिंग से मरने वालों की संख्या क्या है?

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : पुलिस फायरिंग से मरने वालों की संख्या। वहां पर मॉब्स थे, दोनों तरफ से थे । यह ठीक है कि हिन्दू मॉब्स ज्यादा थे और जब फायरिंग हुई तो फायरिंग में लोग मरते हैं। देखिए, मैं जो बात निवेदन कर रहा हूं, हमारी एक जवाबदारी है। हमारी मतलब सरकार की नहीं, देश की जवाबदारी है और वह देश की जवाबदारी है। हमारी मतलब सरकार की जवाबदारी तब निभेगी जब हमारे जो एप्रोचिज हैं, उसके अनुसार अपनी बात करेंगे। शबाना जी ने यह सवाल पूछा, नहीं तो मैं कभी इसके आंकड़े नहीं बताता कि कितने हिन्दू मरे और कितने मुसलमान मरे । मेरी जो जानकारी है वह मैंने बताई । हां, उसी प्रकार से मैं पैसिविटी नहीं मानता , मैं कम्पलीसिटी नहीं मानता । इन चीजों के बारे में जितने आरोप लागये गये हैं , उनके जो परिणाम होंगे, वे जुडिशियल कमीशन के सामने आ जायेंगे, अन्यथा जितनी जानकारी मैंने की, 72 घंटे के अंदर-अंदर इतना बड़ा दंगा, उसको रोक देना, इतनी बड़ी डिस्टरबैंस का रोक लेना और शांति ले आना, यह बड़ा कठिन काम है । उसके बारे में भी मैंने पूछा कि फायरिंग हुई या नहीं हुई। हमारे केरल के एक माननीय सदस्य ने आपत्ति की कि हमारे लॉ-मिनिस्टर साहब ने क्यों इसकी तुलना 1984 की घटना से की, वह तुलना नहीं कर रहे थे। लेकिन वह भी गलत था। मैं पूरी तरह से सहमत हूं कि 1984 में जो

कुछ हुआ वह गलत था और 2002 में जो कुछ हुआ वह भी गलत है। लेकिन 1984 में हजारों लोग मर गए, एक बार भी कभी गोली नहीं चली, एक बार भी कभी लाठी चार्ज नहीं हुआ और इस बार इन तीन दिनों के अंदर कितनी ही बार गोलियां चलीं, कितनी ही बार कर्फ्यू लगाया गया और आर्मी भी बुलायी गई। यह सब कुछ होने के बाद भी कहा जाता है कि पुलिस पैसिव थी। यहां तक हमारे किसी मित्र ने यह आरोप लगा दिया।

यह शब्द जो हैं , उसके परिणाम अच्छे नहीं होंगे। हम जो चाहते हैं , वह कभी नहीं होगा और लगातार यह कहना कि रिज़ाइन करो या यह कहना कि नरेन्द्र मोदी जी को रिज़ाइन करना चाहिए, गलल होगा। मुझे याद है – सिब्बल जी ने शायद सही कहा था। उन्होंने कहा कि गुजरात को लगातार आपत्तियों को झेलना पड़ रहा है। पिछले साल एक प्राकृतिक भूंकप हुआ और उस प्राकृतिक भूंकप के बाद अब एक मानव निर्मित भूंकप हुआ है। पहले तो एक नैचुरल अर्थ क्वेक था, अब एक मैन-मेड अर्थक्वेक हुआ है। सही बात है। लेकिन याद करिए, जब वह प्राकृतिक भूकंप आया था, तब भी सारी चर्चा का लुब्बे-लबाब क्या था? केशुभाई पटेल रिज़ाइन करें। Keshubhai Patel must go'. Don't forget it. यह जो एक टैडेंसी हमारे यहां पर हो गयी है , यह केवल इस केस में ही नहीं है। मैं इस प्रकार के अनेक उदाहरण दे सकता हूं। हमारी एक ससंद सदस्या की मृत्यु हो जाए तो कहा जाता है कि फलाना इस्तीफा दे। Is this a mature approach on the part of political parties in a democracy? Why this great distinction between India's response to crises of this kind and America's response to a crisis of that kind? ..*(Interruptions)...* अमेरिका कोई बहुत ...(व्यवधान)...

SHRI NILOTPAL BASU: Then, there will be no accountability in the parliamentary system. If somebody is found........*(Interruptions)...* There has to be some accountability. ...*(Interruptions)...* Every time, the Opposition here will try to ensure accountability on the part of the Government. ...*(Interruptions)...* We have to ask questions. ...*(Interruptions)...*

SHRI L K. ADVANI: Nilotpalji, may I tell you that we have been in the Opposition all our lives? सरकार में तो हम भूल-चूक में आ गये। अगर कोई ऐसी बात होती है तो हमें तकलीफ होती है और हमें लगता है कि हम उसके लिए जिम्मेदार हैं। मुझे जब कभी भी ऐसा लगा है तो मैंने इन्हीं चार सालों में शायद दो बाद गंभीरता से सोचा होगा कि मैं अपना पद छोड़ दूं। उस दिन मैंने अपना पद छोड़ने का विचार किया जिस दिन इसी हाऊस में बैठे हुए मुझे अमरनाथ यात्रा पर हमले की सूचना मिली थी और यह सूचना मिली थी कि इतने लोग मारे गये। तब मेरे मन में यह विचार आया था। मैं आपको बताना चाहूंगा कि उस वक्त – मेरे नेता यहां पर बैठे हैं – उन्होंने तो मुझे रोका ही लेकिन साथ-साथ विपक्षा के लोग भी थे जिन्होंने आकर मुझे कहा कि आप यह क्या कर रहे हैं , क्यों कर रहे हैं? आप अगर ऐसा करेंगे तो उससे

---

* Expunged as ordered by the Chair.

खुशी किसको होगी? उन्हीं आतंकवादियों को होगी। आप ऐसा क्यों करना चाहते हैं? इसीलिए don't think that I am not concerned about accountability, parliamentary accountability or legislative accountability. But, at the same time, I would plead with you that this is not the way. हमारे यहां पश्चिम बंगाल में घटना होती थी, हिंसा होती थी, और कहा जाता था * हममे से किसी ने इस्तीफा नहीं मांगा। ...(व्यवधान)...

श्री नीलोत्पल बसु : आप सैंट्रल गर्वनेमेंट से लोगों को भेज देते थे ...(व्यवधान)... वह दिन याद कीजिए। ...(व्यवधान)...

श्री सिकन्दर बख्त (मध्य प्रदेश) : यह क्या बात हुई, जब चाहे खड़े हो जाते है । ...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN Let the Home Minister complete. *...(Interruptions)...*

SHRI L. K. ADVANI: I am concerned about thatलेकिन मैं आज चाहता हूं कि इस गुजरात की घटना के बाद हम सब उससे सबक सीखें कि पॉलिटिकल रिसपाँसिज सही होने चाहिए, सिलैक्टिव नहीं होने चाहिए और केवलमात्र इस्तीफा मांगने की बात नहीं होनी चाहिए। अगर कहीं पर कोई गलती है, for example, as I said, there may have been instances of Police complicity. I do not deny that. But a general condemnation of the Police authorities and a general allegation against them that they have behaved in a terrorist manner, is not justified. मैं स्वयं अभी भावनगर गया ...(व्यवधान)... I am not yielding.

श्री मूलचन्द मीणा (राजस्थान) : आप ...(व्यवधान)...

SHRI L. K. ADVANI: I am not yielding.

श्री मूलचन्द मीणा : इतने लोग मार दिये जाएं, इतने लोग जला दिये जाएं, उसको आप गलती कह रहे हैं? ...(व्यवधान)... होम मिनिस्टर साहब, अपनी जिम्मेदारी समझिए। ...(व्यवधान)...

श्री संघ प्रिय गौतम : जिम्मेदारी समझ रहे हैं, आपकी तरह नहीं हैं। ...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: Let the Home Minister speak.

---

* Expunged as ordered by the Chair.

SHRI L. K. ADVANI: Mr. Chairman, I had occasion to visit Bhavnagar in the course of my tour of Gujarat and I was very pleased because I confronted the Police. I asked them. They, of course, tell me that here, in Bhavnagar, three persons have been killed in police firing; two persons have died in the violence.

Then, I asked them, "What have you done in these three-four days?" I was very happy to learn when they told me, "The focus of people's anger was a large *madrasa* just outside the Bhavnagar city in which 400 children were studying. The villagers around were gathering to attack that *madrasa.* Subsequently, they attacked the *madrasa* also. In the meanwhile, what we did was, we brought those 400 children and the two or three maulvis who were in that *madrasa* to the Bhavnagar city and kept them in a safe place." In fact, those maulvis and some of the children came to meet me. I felt very happy that there was a very different situation. With all such examples, if we keep on our tirade and make general sweeDing allegations that the police have been complacent, police have been behaving like terrorists and the whole Government has been this and that, frankly, I don't think that this is the way of solving this serious problem. It is not an ad-hoc problem. Even though Gujarat is the birthplace of Gandhiji जितने दंगे गुजरात में हुए पिछले सालों में, महीनों-महीनों तक कर्फ्यू चलते रहे और कभी ऐसा नहीं हुआ जैसे कि अभी । 72 घंटों में स्थिति को कुछ नियंत्रण में लाया गया। मैं इंकार नहीं करूंगा कि तनाव अब भी है । मैं इंकार नहीं करूंगा, तनाव अब भी है और मैंने वहां पर एक-एक स्थान पर वह कहा। मैंने कहा –"Merely restoring peace is not sufficient. What is needed is to jreate a sense of security in the mind of every citizen, irrespective of whether he is a Hindu or a Muslim जब तक वह सेंस ऑफ सिक्योरिटी नहीं आती तब तक सरकार को यह सोचना चाहिए कि हमारा काम पूरा नहीं हुआ है। This was the address that I gave at every place which I visited; and still I feel, आज मैंने उनसे पूछा कि भाई, आपने रिलीफ और रीहेबिलिटेशन का क्या किया है, तो उन्होंने मुझे बताया है कि कुल मिलाकर 86 रिलीफ कैंप चल रहे हैं जिनमें से 45 अहमदाबाद में हैं । There are about 45 relief camps in Ahmedabad. In all, 81,000 people are staying in those 86 camps aft? और उनको कितना-कितना उन्होंने अनाज दिया है, क्या कुछ दे रहे हैं, इसका सारा वर्णन है जिसमें मैं जाना नहीं चाहता हूं लेकिन मैं इतना जरूर कहूंगा ...(व्यवधान)...

श्री गुलाम नबी आजाद (जम्मू और कश्मीर) **:** इसमें गवर्नमेंट का क्या है? ये सब तो एन.जी.ओज़ के हैं, गवर्नमेंट का एक भी नहीं है ।

SHRI NILOTPAL BASU: Mr. Chairman, Sir, you have to protect us. No help is reaching the relief camps from the State Government. *...(Interruptions)...*

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: Please sit down. *...(Interruptions)...*

SHRI L.K. ADVANI: Sir, I have nothing more to add. *..interruptions)...*

श्री सी. एम. इब्राहीम (कर्णाटक) : सर, हम देखकर आए हैं । हम रोजाना टी.वी. पर देख रहे हैं । मैंने आडवाणी जी से यह ऐक्सपेक्ट नहीं किया था, क्या आप इस तरह से इस चीज़ को डिफाईन करेंगे? आप मानते हैं कि गुजरात सरकार फेल हुई, आप मानते हैं कि हम लोग फेल हुए हैं । उनके लिए क्या आप सिर्फ ममता दिखाएंगे? आप क्या ऐक्शन लेंगे? Are you going to dismiss that Government for these lapses? You are talking of appointing a retired High Court judge to enquire into the incidents. We are demanding that a Supreme Court judge should be appointed to enquire -into it. अभी गुजरात में हजारों लोग मारे गए। Advaniji, what case are you defending here?

श्री गुलाम नबी आजाद : चेयरमैंन साहब, अभी होम मिनिस्टर साहब ने एक बात बताई। I would like to put the record straight. The Hon. Home Minister talked of selective reaction. This is totally wrong and spread by that side. On the very first day, the Congress President, Shrimati Sonia Gandhi issued a written statement. Three members of the Working Committee, namely, Shrimati Ambika Soni, Shri S. Jaipal Reddy and myself had a joint Press conference. I had arranged an *Ed Milan* party wherein 500 people were invited. We had to put it on the notice board; we had to inform them through SOS that it was cancelled. So, this was not selective. We were more forthright from the first day itself. So, this is just a rumour which is being spread. *...(Interruptions)...* I am talking about the action taken immediately after the Godhra incident. We did this in respect of the Godhra incident only, not on what happened after that. *...(Interruptions)...*

SHRI CM. IBRAHIM: Sir, we want a categorical response from the Home Minister. *...(Interruptions)...*

श्री अहमद पटेलः सभापति महोदय, मैं गृह मंत्री जी से एक चींज पूछना चाहता हूं आपने जो कहा कि पुलिस फायरिंग में जो लोग मारे गए, कम से कम डेट तो दे सकते हैं कि कौन सी तारीख को फायरिंग में लोग मारे गए क्योंकि पहले दो दिन तो इनऐक्शन था। दो तारिख से यह हुआ । ...(व्यवधान)...

SHRI B.P. SINGHAL: Sir, 2000 Muslims were saved. *...(Interruptions)...* What is selective is this. *...(Interruptions)...*

श्री अमर सिंह (उत्तर प्रदेश) **:** महोदय, मैं आदरणीय गृह मंत्री जी से बड़े आदर के साथ सिर्फ एक ही बात कहना चाहूंगा कि जो अवधारणाएं बनी हैं ...(व्यवधान)... वे अवधारणाएं ...(व्यवधान)... एक सेकेंड प्लीज ...(व्यवधान)... मैं आदरणीय गृह मंत्री जी से यह पूछना चाहता हूं कि शबाना आज़मी, मैं, राज बब्बर और सीताराम येचुरी, अहमदाबाद गए थे और हमने वहां जाकर नरेन्द्र मोदी से बात की थी। नरेन्द्र मोदी जी ने यह कहा कि अमर सिंह जी आपका, शबाना जी, राज बब्बर और युचुरी जी का चेहरा टेलीविजन के माध्यम से जाना हुआ है और आपके ख्याल जाने हुए हैं। अगर आप वहां जाएंगे तो वहां आपकी कोई सुरक्षा नहीं होगी क्योंकि सबको पता है कि आप लोग मुस्लिम परस्ती, मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति करते हैं । इस तरह के बयान की वजह से इस तरह की धारणा बढ़ी है। यह सही है कि कुछ अच्छे काम भी हुए हों लेकिन मुख्य मंत्री को इस तरह की बात करने का कोई अधिकार नहीं है।

श्री भारतेन्दु प्रकाश : कहीं भी किसी ने ऐसा नहीं कहा ...(व्यवधान)...

श्री अमर सिंह : हम लोग चार लोग थे, शबाना जी, राज बब्बर, अमर सिंह और सीताराम येचुरी । हमको मुख्य मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा कि आपके चेहरे, ख्यालात, जाने हुए हैं और मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति करते हैं। ...(व्यवधान)... SHRI NILOTPAL BASU: A delegation went there. That delegation is saying that till date, there was no assistance from the State for camps there.

श्री अमर सिंह : किसी भी मुख्य मंत्री को यह बात कहने का अधिकार नहीं है ...(व्यवधान)...

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : नहीं, ऐसा नहीं है ...(व्यवधान)...

श्री अहमद पटेल : सर, एक मिनट, अभी माननीय गृह मंत्री जी ने कहा कि पुलिस फायरिंग में इतने लोग मारे गए। मैं इनसे यह जानना चाहता हूं कि 27, 28 और 1 तारीख को कितने लोग मारे गए हैं और 1 तारीख के बाद कितने लोग मारे गए? हमें कम से कम यह ब्रेक आप दे दीजिए ।

श्री गुलाम नबी आजाद : सर, हम आपसे पूछना चाहते हैं कि क्या गृह मंत्री जी ने अपना भाषण खत्म कर दिया है?

श्री सभापति : हां, खत्म कर दिया है।

श्री सुरेश पचौरी : सभापति महोदय, गुजरात में जो घटना हुई है, उसके संबंधमें गृह मंत्री जी ने जो वक्तव्य दिया है, यह गैर जिम्मेदाराना है और सत्यता से परे हैं। पूरा रोष गुजरात के मुख्य मंत्री नरेन्द्र मोदी पर आता है, वहां की सरकार पर जाता है और केन्द्र सरकार पर जाता है। केन्द्र सरकार ने भी समय रहते कोई कदम उनहीं उठाया। ...(व्यवधान)...

SHRI GHULAM NABI AZAD: What about setting up of a Commission? Our demand is that it should be headed by a Supreme Court Judge. It should be no less than a Judge of the Supreme Court.

SHRI L.K. ADVANI: A Commission has already been set up by the State Government सभापति जी, स्टेट गवर्नमेंट ने एक ज्यूडिशियल कमीशन बैठाया है। सैन्ट्रल वगर्नमेंट कभी ऐसा नहीं करती कि उस कमीशन के ऊपर अपना कमीशन बैठा दे । ...(व्यवधान)...

श्री गुलाम नबी आजाद : जब तक उसमें सुप्रीम कोर्ट का जज नहीं होगा, तब तक हम लोगों को कोई भरोसा नहीं होगा। ...(व्यवधान)...

श्री सुरेश पचौरी : केन्द्र सरकार ने समय रहते कोई कार्यवाही नहीं की है ...(व्यवधान)...

SHRI GHULAM NABI AZAD: We stage a walk out in protest.

(Interruptions)

(At this stage, some hon. Members left the Chamber)

MR. CHAIRMAN: The House is adjourned for lunch for one hour.

The House, then, adjourned for lunch at fifty-eight minutes past twelve of the clock.

The House reassembled after lunch at two minutes past two of the clock, THE DEPUTY CHAIRMAN in the Chair.

उपसभापति : जब उपसभापति बोलते हैं, मुझे बड़ा अजीब सा लगता हैं, इसिलए कि यह पति कैसे बना? *(Interruptions)...We* should make some changes in it. I mean, I, definitely', would not like to become the 'Upa-Sabhapatni.' But there should be some change *(Interruptions)...*

SHRI PRANAB MUKHERJEE (West Bengal) : Madam, during the whole tenure of Smt. Violet Alva, we had been addressing her as 'The Deputy Chairman' or 'Madam Deputy Chairman' not as 'Madam Chairperson'...THE DEPUTY CHAIRMAN: 'Chairman' or 'Chairperson' is okay. But, in Hindi, 'उपसभापति' sounds very peculiar.

श्री बालकवि बैरागी (मध्य प्रदेश) **:** उपसभापति महोदया, सभा अपने आप में स्त्रीलिंग है, जो भी अध्यक्षता करेगा, उसे पति ही माना जाएगा।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Male-dominated society! Okay, we have the Consumer...

MATTER RAISED WITH PERMISSION SITUATION AYODHYA

SHRI PRANAB MUKHERJEE (West Bengal) : Madam, before we take up either the Short Duration Discussion or the Legislative Business, with your permission, I would like to inform you that I had already given a notice that I would like to draw the attention of the House to a very important issue that is taking place in Ayodhya, specially, with reference to the fact that, now, the State is under President's Rule and the Government of India has a direct responsibility as the administrator of the State's affairs through the Governor. We are hearing about a number of developments that are taking place in Ayodhya. It is understandable that the Government is trying various means to defuse the tension and is also trying to resolve the issues. Naturally, we did not raise the issue on the floor of the House when the whole thing was in the process. The assistance and support of the religious leaders was sought. Efforts were made to persuade both the sides. The hon. Prime Minister had a meeting with the leaders of those who are engaged in the temple movement and also with the leaders of various other minority representatives. But, at least, when the House is in Session, is it not the responsibility of the Government to inform the House as to what they want to do and what their stand is? Why is it that we have to read the newspapers, watch the television or other electronic media to get the views of the Government when the Parliament is in Session? When Parliament is in session, the Government should have taken the House into